बदलाव की दास्तां -

अपने स्कूल में जीवन कौशलों को बढ़ावा देनेवाले शिक्षकों की कहानियां

ड्रीम अ ड्रीम

वर्ष 1999 में शुरू किया गया, ड्रीम ए ड्रीम एक पंजीकृत चेरिटेबल ट्रस्ट है, जो कमजोर पृष्ठभूमि के बच्चों और युवाओं में जीवन कौशल का विकास कर प्रतिकूल परिस्थितियों से बाहर लाकर उन्हें 21 वीं शताब्दी में विकसित होने के लिए सशक्त बनाता है।

वर्तमान में, हम अपने दो नवाचारी कार्यक्रमों के द्वारा एक साल में 10,000 युवाओं के साथ कार्य कर रहे हैं | विद्यालय में जीवन कौशल को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रमों और रोजगार से जोड़ने वाले कार्यक्रमों के बाद, हमनें 206 साथियों के साथ मिलकर 7,700 से ज्यादा शिक्षकों को प्रशिक्षित किया है, जिन्होंने 1,92,500 बच्चों पर प्रभाव डाला और दिल्ली, झारखंड एवं उत्तराखण्ड में राज्य सरकारों के साथ रणनीतिक साझेदारी करके 1 मिलियन (10 लाख) से ज्यादा बच्चों को लाभान्वित किया है। हम स्थानीय दान दाताओं, कॉरपोरेट्स, स्वयंसेवकों, सरकारों, विशेषज्ञ सलाहकारों और राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय रणनीतिक भागीदारों के मेजबानों के साथ एक मजबूत और सहयोगी दृष्टिकोण पर काम करते हैं। अधिक जानकारी के लिए, हमारी वेबसाईट www.dreamadream.org पर देखें ।

संपादक - पविला राजगोपाल | कवर फ़ोटो - प्रसन्ना एच | चिलांकन - मारिया जॉय (create@storieswithus.co)

जीवन कौशल में प्रवीण

22 वर्षों पूर्व, सिर्फ एक विचार लेकर 11 व्यक्तियों साथ में आए थे| वे स्वेच्छा से अपना समय ऐसे बच्चों के लिए देने के लिए आए , जो बीमार, परित्यक्त, त्यागे व घर छोड़ कर आये हुए और एचआईवी संक्रमित थे | उन सभी को विश्वास था कि वे खेल और गतिविधियों के माध्यम से और उन्हें समय देकर वे उन बच्चों को फिर से खुशी और आशा का अनुभव कराने में मदद कर सकते थे। वे ऐसे सारे बच्चों को एक साथ लाना चाहते थे, जिन्हें ऐसे लोगों के सहयोग की आवश्यकता है, जो उनकी देखभाल कर सकें और उनमें अर्थपूर्ण जीवन जीने के सार्थक जुड़ाव को पैदा कर सकें। यह विचार एक ऐसे गूढ़ विश्वास से आया है कि "पृष्ठभूमि को देखे बिना हर इंसान के भीतर अद्वितीय विभिन्नता की सराहना की जाए"। मैं भली भांति कह सकती हूँ कि उनमें से किसी ने भी नहीं सोचा था कि उनका यह विचार एक दिन वैश्विक आंदोलन में परिवर्तित हो जाएगा।

इसकी शुरुआत के बाद से, हमारे साथ 240 से भी ज्यादा कर्मचारी हैं जो ड्रीम अ ड्रीम टीम का हिस्सा रहे हैं, जो 10,000 से ज्यादा स्वयंसेवकों और सलाहकारों, मेंटर, बोर्ड के सदस्यों, दान दाताओं और परामर्शदाताओं के साथ काम कर रहे हैं तथा 30 लाख से भी ज्यादा बच्चों और युवाओं के जीवन को प्रभावित किया है। परन्तु सबसे ख़ास बात यह है कि हम युवाओं के समर्थक हैं और आज हम उनके साथ गर्व से खड़े हैं, क्योंकि वे ही हमें आगे का रास्ता दिखाते हैं।

ड्रीम अ ड्रीम का 20वां वर्ष हमारे लिए एक अत्यधिक महत्वपूर्ण मोड़ था। यह एक ऐसा वर्ष था, जिसमें हमने सारे देश में विशेष तौर पर सार्वजनिक स्कूलों में शिक्षा प्रणाली में जीवन कौशल को बढ़ावा देने के लिए सुनियोजित निवेश देखा। जीवन कौशल को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2018 में हैप्पीनेस पाठ्यक्रम को शुरू करने हेतु, दिल्ली सरकार के साथ सहयोग करना एक अविस्मरणीय एवं अग्रणी क्षण था और तब से हमने कई अन्य राज्यों के विभागों को भी स्कूल कैलेंडर के भीतर ही जीवन कौशल आधारित शिक्षा को जोड़ने के महत्व को स्वीकार करते हुए देखा। हमने जीवन कौशल को बढ़ावा देने के दृष्टिकोण पर शिक्षकों की क्षमता का निर्माण करने के लिए स्कूलों में एक लहर उमड़ते देखा साथ ही हमने सामाजिक एवं भावनात्मक शिक्षा (SEL) और जीवन कौशल आधारित प्रयोगों के प्रभाव पर, दुनिया में हो रहे नए वैश्विक अनुसंधान में भी अपना योगदान दिया।

हम स्वीकृति की एक लहर का आभास कर रहे हैं कि सकुशल व्यवहार और जीवन कौशल छात्रों के मूल में होना चाहिए, जिससे वह व्यक्तिगत, सामाजिक और वैश्विक स्तर पर तैयार हो सके। लंबे समय से समर्थन कर रहे प्रतिबद्ध दानदाताओं, रणनीतिक साझेदारों, सरकारों, तथा वैश्विक सतत विकास लक्ष्य 4 में इस पर चर्चा एवं कार्य होने से हम सब में एक उर्जा बनी रही है | इन सहयोग के कारण यह वर्ष हमारे अब तक के सबसे अच्छे वर्षों में से एक है। इस सफ़र ने हमें ज्यादा सजग और विनम्र बनाया है। हम आशा करते हैं कि हम भारत और विश्व स्तर पर विचारशील नेता बने रहें साथ ही इन अवधारणाओं एवं मानसिकता में सकारात्मक बदलाव लाएँ और जीवन कौशल की बातचीत को आगे बढ़ाएँ जब तक कि सभी युवा, खास तौर पर जो कमजोर पृष्ठभूमि से हैं, उनके पास भी कौशल, उपकरण, और वातावरण मिल जाए ताकि वे दुनिया में अर्थपूर्ण भागीदारी करे |

सुचेता भट्ट
सीईओ (मुख्य कार्यकारी अधिकारी), ड्रीम अ ड्रीम

विषय सूची

प्रस्तावना 4

शिक्षक विकास कार्यक्रम 5

हमारी पहुँच 5

हमारा दृष्टिकोण 7

हमारा प्रभाव..8

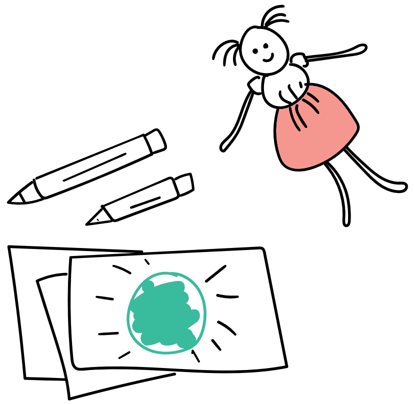

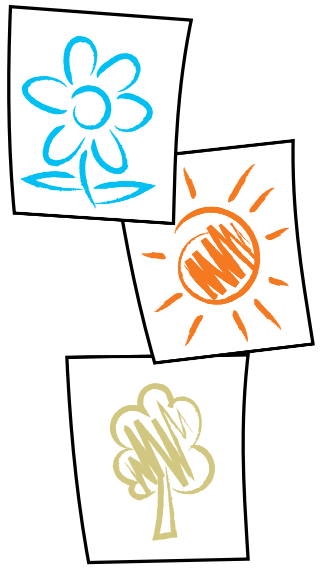

अपने स्कूल में जीवन कौशलों को बढ़ावा देने वाले

शिक्षकों की कहानियां 13

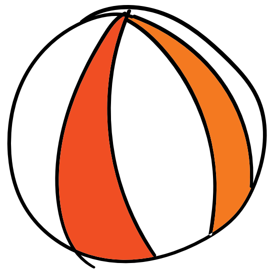

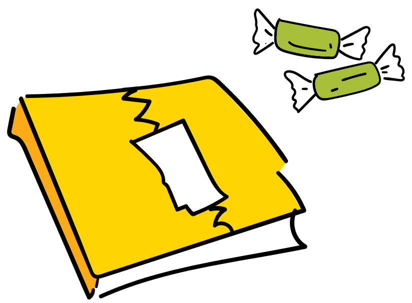

प्रस्तावना

वैश्विक महामारी का सामना करने के बाद, हम यह समझ पाए कि ऐसी महामारी से होने वाला नुकसान बच्चों के विकासात्मक मील के पत्थर प्राप्त करने की क्षमता को प्रभावित कर सकता है| यह स्पष्ट हो गया है कि भविष्य में 21वीं सदी के लिए हम तैयार हो जायें और महामारी से पनपने वाली असफलता को बढ़ने से रोकने के लिए हमें एक ऐसी शिक्षा प्रणाली बनाने की आवश्यकता है जो आने वाली महामारी का आसानी से सामना कर सकें|

तो फिर, ऐसा क्या तरीके हो जिनसे भविष्य के लिए बच्चों को तैयार किया जाये और उन्हें पूर्ण रूप से विकसित होने में मदद करे? हमें युवा लोगों के साथ काम करने का दो दशकों का अनुभव है जिससे, हमें पता चला है कि समानुभूतिशील वयस्क और सुरक्षित वातावरण मिलने पर युवा प्रतिकूल परिस्थितियां आने के बावजूद भी पूरी तरह से अपनी क्षमता की खोज करते हैं और विकसित करते हैं । 2012 में, हमने शिक्षक विकास कार्यक्रम शुरू किया और शिक्षकों के साथ कार्य करना शुरू किया, ताकि वे कक्षा का वातावरण ज्यादा समानुभूतिपूर्ण और रचनात्मक एवं सुरक्षित बना सकें।

हमारा विश्वास है कि जब शिक्षक स्वयं को एक देखभाल एवं स्नेहपूर्ण व्यवहार करने वाले वयस्क के रूप में विकसित कर पाते है, तभी वे बच्चों के लिए एक उचित और सीखने का वातावरण बनाते है। एक शिक्षक थे जो हमारे कार्यक्रममें शामिल हुए उन्होंने वापस आकर हमें यह बताया कि - “मेरी कक्षा में एक लड़की है जो लगातार देर से आती है और जब भी वह मेरी कक्षा में देर से आती है, मैं उसे बाहर भेज देता हूँ। इस कार्यक्रम में से प्रशिक्षित होने के बाद , अगली बार जब मैं कक्षा में पुनः गया, वह लड़की फिर देर से आई। मैं उसके साथ बैठा और उससे पूछा की मैं जानना चाहता हूँ कि तुम देर से क्यों आती हो। वह हैरान थी, क्योंकि मैंने उससे यह सवाल पहले कभी नहीं पूछा था। उसने हिम्मत जुटाई और कहा कि वह सुबह जल्दी उठती है, अपने माता-पिता को घर के कामों में मदद करती है और फिर समय पर स्कूल पहुंचने के लिए दौड़ती है। लेकिन उसे देर हो जाती है, क्योंकि उसके घर पर घड़ी नहीं है। यह बात मेरे दिल में घर कर गयी, उस दिन से मैं हमेशा अपने बच्चों की बात ध्यान से सुनता हूँ”।

यह शिक्षक के लिए एक स्वयं के लिए बदलाव का क्षण था क्योंकि सभी का यह का मानना था कि लड़की को पढ़ने में कोई दिलचस्पी नहीं है और तभी, उन्हें पता चला कि वह पढ़ने के लिए गम्भीर है लेकिन ऐसा एक परिस्थिति की वजह से हो रहा है, जो उसके नियंत्रण में नहीं है, इसीलिए उसे देर हो जाती है। एक वयस्क में इस तरह की समझ होने से बच्चे में भी बदलाव के अनुभव की शुरुआत होती है। इसलिए, यह आवश्यक है कि शिक्षकों को जीवन कौशल शिक्षा में प्रशिक्षित किया जाए, और बदले में छात्र भी उनसे ज्यादा बेहतर तरीके से सीख सकते हैं।

अपने अनुभवों और समझ के साथ “ड्रीम अ ड्रीम” का दृष्टिकोण यह है कि शिक्षा प्रणाली मे जीवन कौशल को मुख्यता दी जाए, क्योंकि इससे बच्चे तेजी से बदलती दुनिया में विकसित होने में सक्षम बनते हैं। यह पुस्तक यह सत्यापित करती है कि कैसे जीवन कौशल पर आधारित शिक्षा से सुसज्जित शिक्षक, बच्चे और खुद में एक गहरा व स्थायी प्रभाव पैदा करते हैं।

भवानी अरुमुघम
सह निदेशक, शिक्षक विकास कार्यक्रम

शिक्षक विकास कार्यक्रम

ड्रीम अ ड्रीम का शिक्षक विकास कार्यक्रम (टीडीपी) शिक्षकों को प्रभावित करने और युवाओं की क्षमता को उजागर करने के लिए कार्य करता है। हम रचनात्मक कौशल प्रशिक्षण का उपयोग करके समानुभूति, रचनात्मकता, सुनने और सत्यापन करने, विश्वसनीय साझाकरण और प्रशिक्षकों में संदर्भदाता की दक्षताओं को पोषित करते हैं। यहाँ पर शिक्षक, शिक्षण का आकर्षक माहौल बनाना सीखते हैं, जहाँ युवा रोज़ाना आने वाली चुनौतियों का सामना करके आगे बढ़ सकते हैं। क्रिएटिव कम्युनिटी मॉडल द्वारा अनुकूलित किए गए दृष्टिकोण को पार्टनर्स फॉर यूथ एम्पावरमेंट (PYE) द्वारा विकसित किया गया है।

शिक्षक विकास कार्यक्रम, कार्यशालाओं की एक श्रृंखला है जिसके लिए 6 से 8 महीनों में निश्चित किया गया है| अतः इसे 4 भागों विभाजित किया गया है और हर भाग के लिए 2 दिन का समय दिया गया है, जो निम्नलिखित बिंदुओं पर केंद्रित की गई है:

- अपनी रचनात्मक क्षमता को समझना और व्यक्त करना सीखना
- समानुभूति के साथ युवाओं को समझना उनके साथ जुड़ना
- गहराई से यह समझना कि युवा कैसे सरलतापूर्वक सीखते हैं और सुगमकर्ता के कौशल विकसित करते हैं
- एक युवा के जीवन में एक विशेष भूमिका निभाना

हमारी पहुंच

वर्ष 2012 में शिक्षक विकास कार्यक्रम की अवधारणा रखी गई थी। अब तक, हम 235 सहयोगी साथी स्कूलों और संस्थानों के 4848 शिक्षकों तक पहुँच चुके हैं, जिससे 121,200 युवा लाभान्वित हुए हैं ।

लाभान्वित शिक्षकों की संख्या

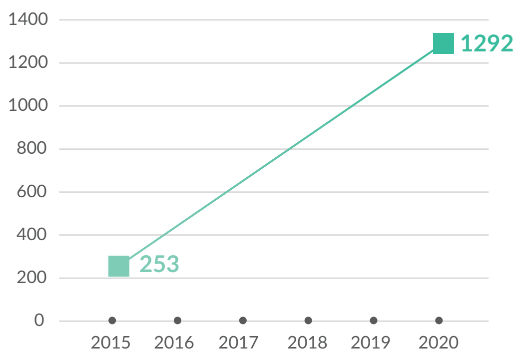

सहयोगियों की संख्या

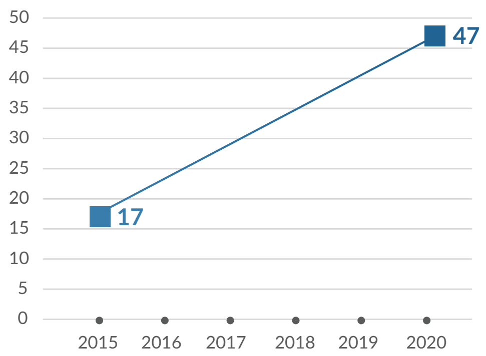

लाभान्वित युवाओं की संख्या

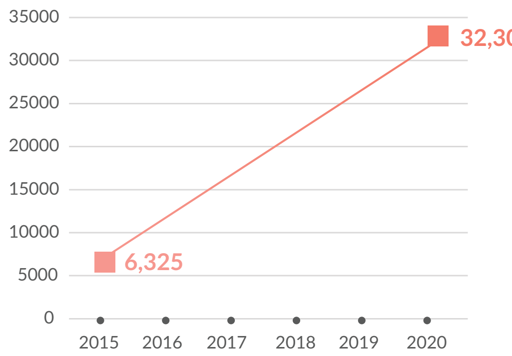

कार्यक्रम पूरा करने वाले शिक्षकों का वितरण*

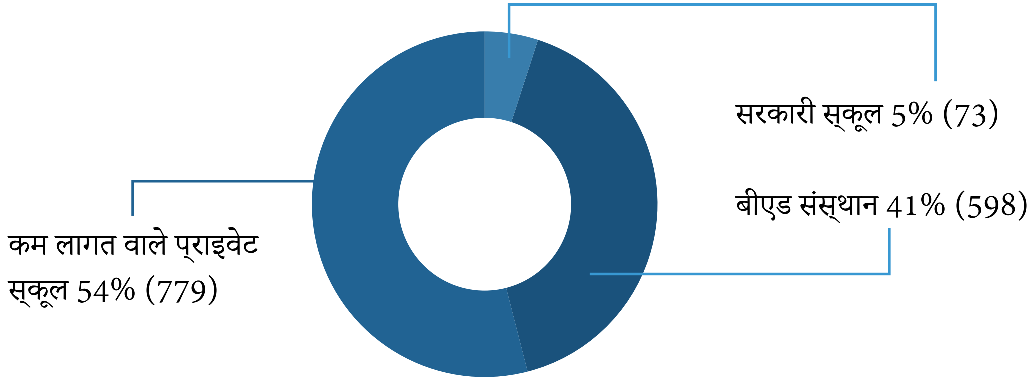

शिक्षक प्रोफ़ाइल *

शिक्षकों का ग्रेड वितरण

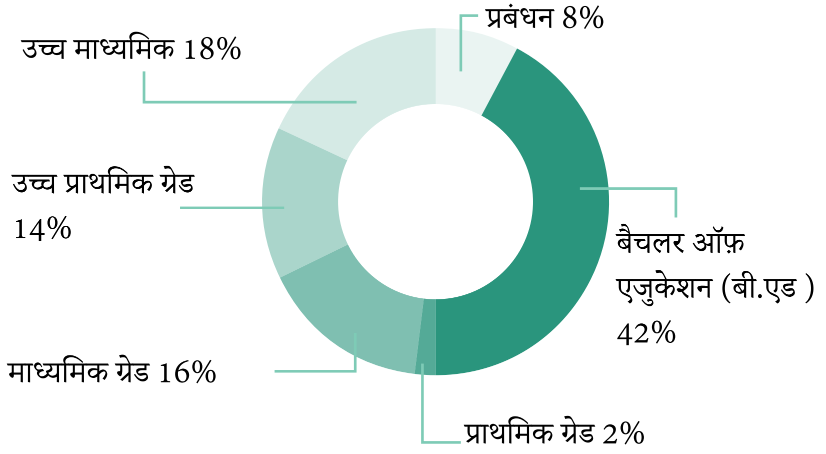

लिंगानुसार शिक्षक

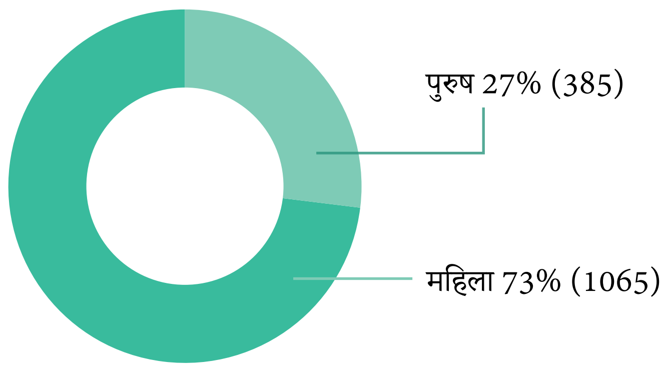

*2018-19 से एक नमूना

हमारा दृष्टिकोण

शिक्षकों के लिए जीवन कौशल संदर्भदाता कार्यशालाओं को सुविधाजनक एवं रचनात्मक और परिवर्तन का चाप (AoT) का उपयोग करके बनाया गया है। AoT वातावरण बनाने की एक प्रक्रिया है। यह कोई गतिविधि या सामुहिक वार्तालाप नहीं है। यह कोई टूलकिट या पाठ्यक्रम नहीं है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्रशिक्षक, परिवर्तन के लिए एक प्रक्रिया से गुजरते हैं। यह एक 'चाप' है क्योंकि एक बार जब आप दूसरी तरफ होते हैं, तो वहां से कोई वापसी का विकल्प नहीं है।

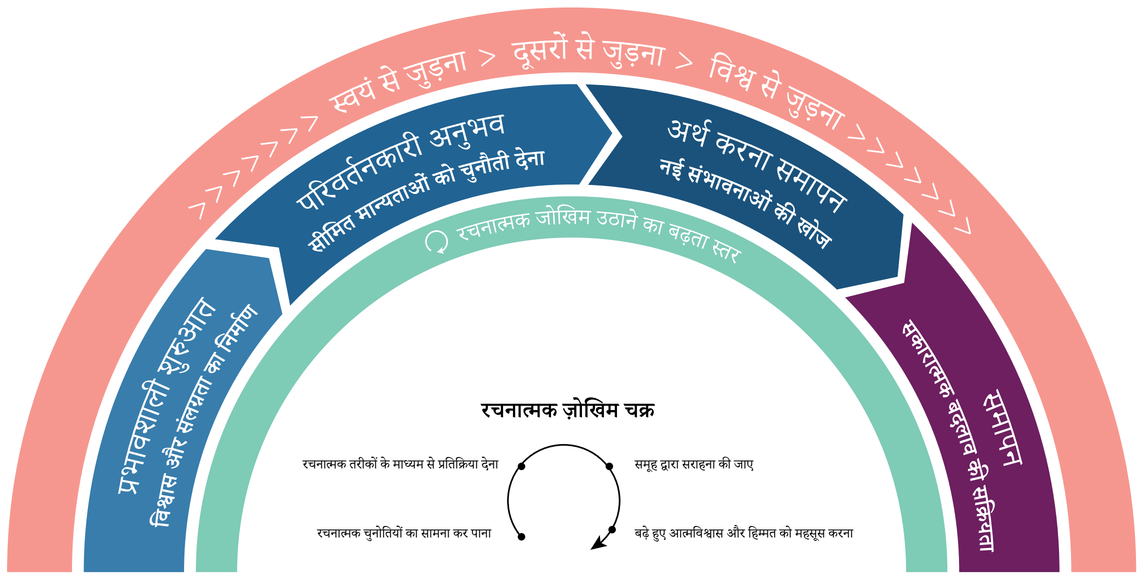

पार्टनर्स फॉर यूथ एम्पावरमेंट (PYE) और ड्रीम ए ड्रीम के भागीदारों द्वारा विकसित परिवर्तन के चाप

परिवर्तन के चाप की प्रक्रिया में चार मुख्य घटक होते हैं। सत्र की शुरुआत हम एक प्रभावशाली तरीके से करते है, जो हमे अपने पहरेदारों को कम करने में हमारी मदद करते हैं और एक दूसरे से जुड़ने में मदद करते हैं और कम जोखिम उठाकर इस रचनात्मक प्रक्रिया पर भरोसा करने में हमारी मदद करते हैं। इसके पश्चात हमें उच्च प्रभाव वाला शक्तिशाली अनुभव प्राप्त होता है। एक ऐसा अनुभव जो कला, या खेल, या किसी अन्य माध्यम का उपयोग करके इसे गैर-न्यायिक तरीके का वातावरण , काम करने के लिए निर्मित किया जा सकता है। ऐसी आशा की जा रही है कि हमने पहले कभी ऐसा नहीं किया है। कुछ ऐसा जो आमतौर पर हमें मूर्खतापूर्ण या अपर्याप्त लगता है। लेकिन जब अनुभव एक सुरक्षित और भरोसेमंद वातावरण में बनाया जाता है, तो हमारा सच अपने आप सामने आ जाता है। हम कार्यशाला के बाहर वास्तविक जीवन में हम जैसे हैं, वैसा ही व्यवहार करते हैं, हम अपने भीतर की आवाज़ों को सुनते हैं। हम स्वयं को 'होने' की अनुमति देते हैं और उस सफ़र में स्वयं को हम जाने देते हैं। अगला कदम पूछताछ करना या भी एक शक्तिशाली अनुभव की प्रक्रिया है। हम गहराई में जाते हैं कि, हम कौन हैं और हम क्या करने में सक्षम हैं, जब हम खुद को उन सभी आवाज़ों और छवियों से दूर देख और सुन सकते हैं जो हमें अपनी ओर पकड़ कर रखती हैं। अंत में, यह सुनिश्चित करने के लिए कि हम कभी नहीं भूलते हैं, हम इस परिवर्तन का जश्न मनाकर सत्र की समाप्ति कर देते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण घटक: एक प्रशिक्षक जो आदर्श प्रशिक्षक की भूमिका में रहकर परिवर्तन के लिए सुरक्षित वातावरण बनाए रखता है। यह सब प्रशिक्षक को इस प्रक्रिया में अपने सबसे प्रामाणिक व्यक्तित्व को सामने लाने के लिए है और एक ऐसा शक्तिशाली अनुभव है जो हमें हमारे सच्चे आत्म व्यक्तित्व की खोज करने को प्रेरित करता है।

अधिक जानने के लिए, आप 30 मिनट का यह वीडियो https://www.youtube.com/watch?v=zZXji5uLC7Q पर देख सकते हैं ।

हमारा प्रभाव

युवाओं के जीवन कौशल में प्रभाव

जीवन कौशल मूल्यांकन मापक (LSAS) का उपयोग करके बच्चों में शिक्षक विकास कार्यक्रम के प्रभाव को मापा जाता है। LSAS दुनिया में इस तरह का पहला, सहकर्मी-समीक्षा वाला, मानकीकृत और प्रकाशित प्रभाव वाला माप का मापक है जो वंचित बच्चों के मध्य जीवन कौशल में आए हुए बदलाव को मापने के लिए उपयोगी है। ये पैमाने बाह्य रूप से कार्यक्रम प्रशिक्षकों द्वारा शुरु किए गए हैं और जीवन कौशल कार्यक्रम के अंत में 5 कौशलों को मापने के लिए बनाए गए हैं।

जीवन कौशल मूल्यांकन की जांच टीडीपी के तहत 13 भागीदार स्कूलों के डेटा सेट प्रस्तुत करता है। वह भागीदार स्कूल कर्नाटक के विभिन्न जिलों में स्थित कम लागत वाले प्राइवेट स्कूल हैं। शिक्षकों ने सभी चार कौशल प्रशिक्षण कार्यशालाओं में भाग लिया और बच्चों पर सकारात्मक प्रभाव लाने के लिए कक्षा में अपनी सीखों को लागू किया। नीचे प्रस्तुत डेटा वर्ष 2018-19 में किए गए विश्लेषण से सम्बंधित है।

विश्लेषण के लिए, 1185 डेटा सेट एकत्र किए गए थे, जिनमें से 674 पुरुष और 511 महिला प्रतिभागी थे। वे 8-16 वर्ष की आयु वर्ग में थे और 5वीं से 9वीं कक्षा में अध्ययनरत थे।

प्रत्येक कौशल में 86.7% प्रतिभागियों में सुधार हुआ

विश्लेषण से पता चला:

- प्रतिभागियों का औसत स्कोर 2.2 से बढ़कर 3.5 अंक हुआ
- कार्यक्रम की शुरुआत में 8.9% प्रतिभागियों का औसत स्कोर >=3 था और कार्यक्रम के अंत में यह स्कोर 80.8% तक का सुधार देखा गया है

जीवन कौशल स्कोर

यह तालिका हमें प्रतिभागियों के स्कोर और आधाररेखा व समपनरेखा से उनके सुधार का विवरण प्रदान करती है

जीवन कौशल	आधाररेखा	समापन रेखा	Iजीवन कौशलों में सुधार
दूसरों के साथ बातचीत	2.3	3.5	1.2
कठिनाइयों पर काबू पाना और समस्याओं को हल करना	2.1	3.4	1.3
पहल करना	2.2	3.5	1.3
झगड़ों को समाधान करना	2.0	3.3	1.3
निर्देशों को समझना और उनका पालन करना	2.3	3.6	1.3
औसत	2.2	3.5	1.3

60 डेसिबल द्वारा बाह्य मूल्यांकन

वर्ष 2019 में, 60 डेसिबल ने शिक्षक विकास कार्यक्रम को एक कार्यक्रम के रूप में और शिक्षकों पर इसके प्रभाव को समझने के लिए, 200 शिक्षकों के फोन पर साक्षात्कार आयोजित किए। 60 डेसीबल एक प्रभाव मापक संस्था है जो सारे विश्व के संगठनों को अपने शिक्षकों, आपूर्तिकर्ताओं और लाभार्थियों को बेहतर ढंग से समझने में मदद करती है। किए गए अध्ययन के कुछ बिंदु नीचे प्रदर्शित किए गए हैं :

टीडीपी शिक्षक कितने संतुष्ट हैं?

TDP का शुद्ध समर्थक स्कोर 65 है जो उत्कृष्ट है और वैश्विक के कम व भारत के औसत डेटा से भी ज्यादा है।

शुद्ध समर्थक स्कोर संतुष्टि और भरोसे का एक पैमाना है। 50 से ऊपर जो भी स्कोर होता है, वह उत्कृष्ट माना जाता है। एक नकारात्मक स्कोर को खराब माना जाता है। TDP का स्कोर 65 है जो की एक उत्कृष्ट स्कोर है।

शुद्ध समर्थक स्कोर (NPS)*

0-10 के पैमाने पर, क्या आप अपने किसी दोस्त या परिवार के सदस्य को शिक्षक विकास कार्यक्रम से जुड़ने के लिए अनुग्रह करेंगे ? (n = 200)

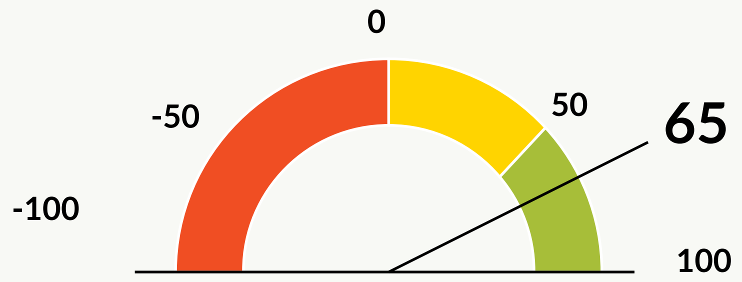

NPS = % प्रमोटर (9-10 सिफारिश करने की संभावना) — % डिट्रैक्टर्स (0-6 सिफारिश करने की संभावना)

NPS मानक

चयनित न्यून डेटा मानक (n = 100+कंपनियां; 25,000 + प्रतिक्रिया दाता)

विश्व स्तरीय न्यून डेटा 100+ कंपनियां	42
भारत का औसत 20+ कंपनियां	34
शिक्षा क्षेत्र का औसत 40+ कंपनियां	42

परिणामों जिनका अनुभव किया जा रहा है

शिक्षण प्रणाली में सकारात्मक बदलाव और समानुभूति में बढ़ोतरी सर्वश्रेष्ठ सामाजिक बदलाव हुए हैं जिसे 50% से अधिक शिक्षकों द्वारा अनुभव किया गया है। शिक्षकों को अपने स्वयं के शब्दों में वर्णन करने के लिए कहा गया था की शिक्षक विकास कार्यक्रम की वजह से वे किन सकारात्मक परिवर्तनों को अनुभव कर रहे थे।

ऐसे 94% शिक्षक जिन्होंने कहा कि जीवन की गुणवत्ता में सुधार आया है, उनके स्वयं के 3 रिपोर्ट के परिणाम:

प्रश्न: कृपया बताएं कि आपके जीवन की गुणवत्ता में कैसे सुधार हुआ है। (n = 189) ओपन-एंड, 60 डेसिबल द्वारा कोडित।

33%
ने शिक्षण में सुधार का अनुभव किया

"मैं शिक्षक नहीं बनना चाहता था, मेरे पास कोई विकल्प नहीं बचा था तो मुझे यह पेशा अपनाना पड़ा। परन्तु कार्यक्रम में आने के बाद, मुझमें एक अच्छा शिक्षक बनने हेतु नवीन ताकत और प्रेरणा का संचार हुआ।"

21%
ने समानुभूति में वृद्धि का अनुभव किया

"पहले मुझ में बहुत ज्यादा डर और शर्म थी | बच्चे मुझसे घुलते मिलते नहीं थे, क्योंकि मुझे जल्दी गुस्सा आ जाता था और वे मुझसे डरते थे | अब मैं उनसे मैत्रीपूर्ण व्यवहार रखता हूँ | "

21%
ने आत्मविश्वास में वृद्धि का अनुभव किया

"मुझे स्टेज से भय लगता था और दूसरों से बात करने में डर लगता था। मैं महिलाओं से बात करने में भी शर्माता था और मुझे शर्मिंदा होने से भी डर लगता था। कार्यक्रम ने मुझे इससे उबरने में मदद की है।"

क्या विकल्प उपलब्ध हैं?

91% शिक्षकों का कहना है कि उन्हें आसानी से एक अच्छा विकल्प नहीं मिला; उन लोगों के लिए जो विकल्प ढूंढ सकते हैं, ज्यादातर TDP को बेहतर विकल्प मानते हैं।

विकल्पों की उपलब्धता प्रतिस्पर्धी परिदृश्य में अंतर्दृष्टि प्रदान करती है और टीडीपी एक रचनात्मक प्रशिक्षण प्रदान करती है। तथ्य यह है कि 91% ने कहा कि वे आसानी से एक अच्छा विकल्प नहीं खोज सकते हैं, और सलाह दी कि टीडीपी एक अनूठा संसाधन है।

विकल्पों तक पहुँच

प्रश्न: क्या आप आसानी से शिक्षक विकास कार्यक्रम का कोई अन्य बेहतर विकल्प खोज सकते हैं ? (n = 200)

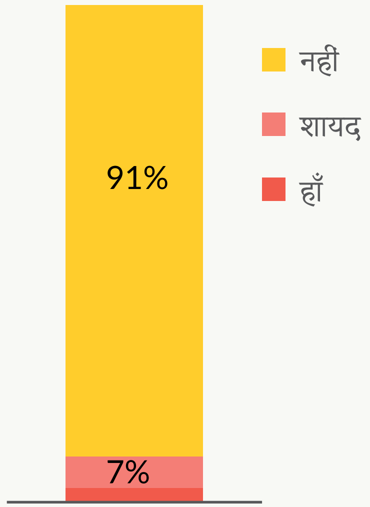

विकल्पों की तुलना

प्रश्न: आप इस विकल्प की शिक्षक विकास कार्यक्रम से तुलना कैसे करेंगे? शिक्षक विकास कार्यक्रम... (n = 18)

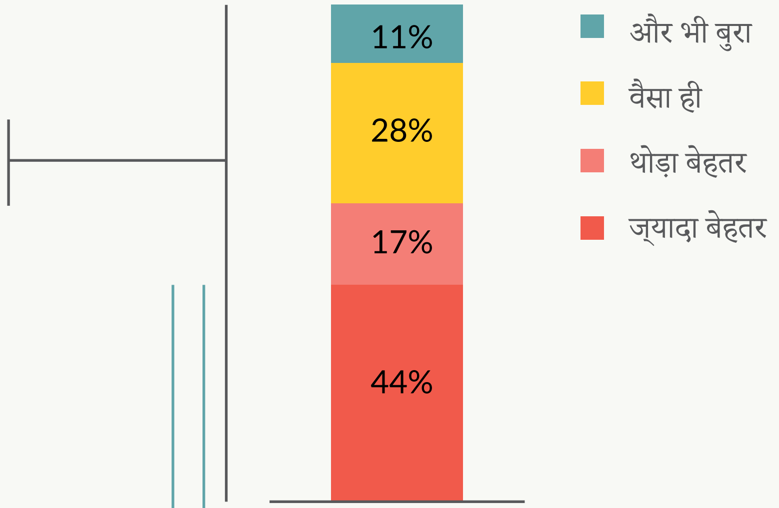

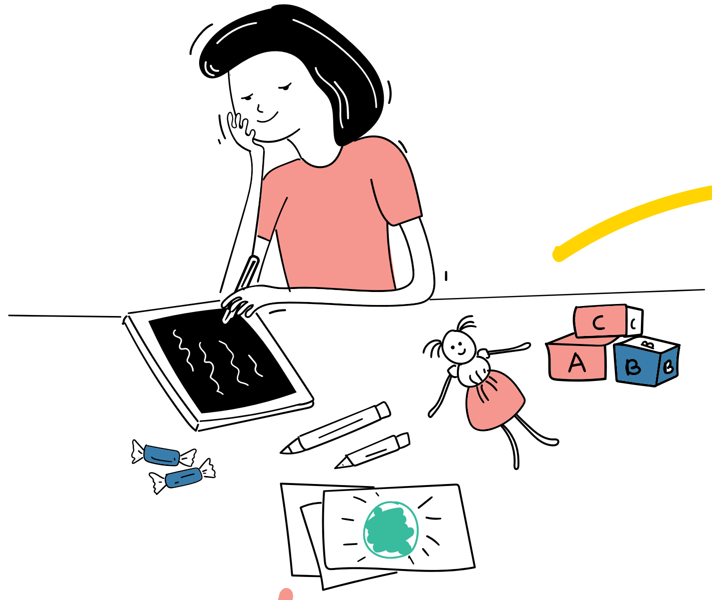

अपने स्कूल में जीवन कौशलों को बढ़ावा देने वाले शिक्षकों की कहानियां

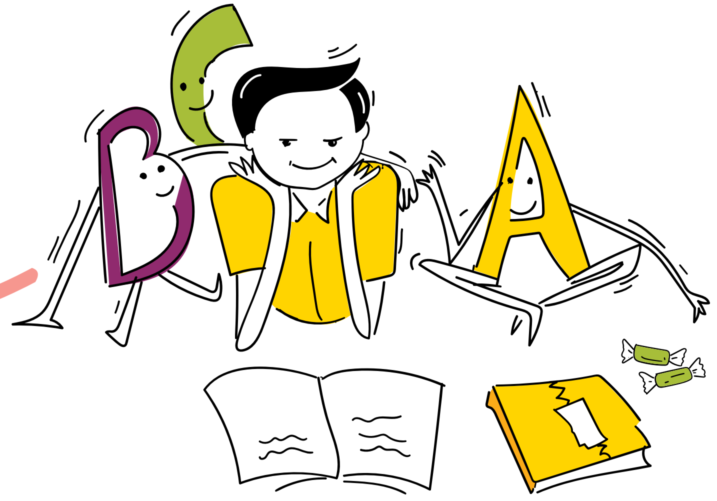

आत्मविश्वास बनाने के लिए शैक्षिक योग्ताओं के बाहर भी क्षमताओं को पोषित करना

कम फीस वाले एक प्राइवेट स्कूल में सामाजिक विज्ञान के एक शिक्षक जिन्हें 6 वर्षों का अनुभव है और कक्षा 8-10 को पढ़ाते हैं।

मेरी कक्षा का एक युवा लड़का, जो पढ़ाई में अच्छा नहीं था, मेरे पास आया और उसने स्कूल के खेल आयोजन में भाग लेने की बात कही; मैंने उसकी रुचि को देखते हुए मना नहीं किया। कक्षा में अन्य छात्र भी उसकी इस हॉबी के लिए उसका उत्साह नहीं बढ़ा रहे थे और मेरे सहयोगियों ने यह भी कहा कि इस लड़के को पढ़ाई पर ध्यान देने की आवश्यकता है, और मुझे उसे खेल कार्यक्रम में भाग लेने की अनुमति नहीं देनी चाहिए, क्योंकि इससे सिर्फ उसका ध्यान भटकेगा। हालांकि, टीडीपी वर्कशॉप से पहले, शायद मैंने उसी तरह का व्यवहार किया होगा, पर अब मैंने इस लड़के को अलग तरीके से देखा। मेरे लिए, ऐसा करना युवा बालक के आत्मविश्वास के निर्माण के लिए था, और यह समझने के लिए कि खेल एक ऐसा रास्ता था, जो उसके लिए ऐसा करेगा। फिर उसने इवेंट में हिस्सा लिया और जीत गया! मैं यह समझ गया हूँ कि एक बच्चे के दृष्टिकोण से सफलता को देखने का क्या मतलब होता है। मैंने बच्चों के साथ बातचीत और मेलजोल बढ़ाना शुरू किया और ना केवल 'क्या' बल्कि चीजों का 'क्यों' भी देखा करता हूँ।

मेरा दृष्टिकोण जो मैंने ड्रीम क्लासरूम के लिए वर्कशॉप के दौरान बनाया, वो हमेशा मेरे साथ रहा। मैं अपने दृष्टिकोण पर चल रहा हूँ, यह जानते हुए कि यह संभव है। आज मेरी स्वयं की शिक्षण विधियों में बहुत बड़ा बदलाव आया है, मैं संगीत और नाटक की मदद से पढ़ाई में मौज-मस्ती को शामिल करने की कोशिश करता हूँ -एक और अंतर्दृष्टि जो मैंने ड्रीम वर्कशॉप के दौरान प्राप्त की थी, क्योंकि वर्कशॉप के बाद ही मुझे यह एहसास हुआ कि मेरी कक्षाएं पहले कितनी उबाऊ थीं!”

धारणा बदलना संभव है

कम फीस वाले एक प्राइवेट स्कूल में विज्ञान के एक शिक्षक जिन्हें 2 वर्षों का अनुभव है और कक्षा 1-5 को पढ़ाते हैं।

कक्षा में रोजमर्रा की दिनचर्या का एक हिस्सा होमवर्क साइन करना और जाँचना है। जो बच्चे अपना होमवर्क पूरा नहीं करते थे उन पर मैं गुस्सा करता और उन्हें सजा दिया करता था। मुझे एक शिक्षक के तौर पर कक्षा के भीतर और बाहर सारी जिम्मेदारियों का प्रबंधन करना मुश्किल लग रहा था। मुझे अध्यापन कार्य थकाऊ लगता था।

जीवन कौशल सरल बनाने पर एक ड्रीम वर्कशॉप मेरे पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन दोनों के लिए एक खास मोड़ था। मैंने धीरे-धीरे बच्चों में भावनात्मक यात्रा और प्राकृतिक क्षमताओं को पहचानना और समझना शुरू किया और शिक्षण कार्य की नीतियों को जाना। मैं बच्चों को एक नए लेंस से देख पा रहा था।

“मैडम, वरुण एक सप्ताह से स्कूल से अनुपस्थित है । वह बहुत डर गया है कि आप उसे सज़ा देंगे, ”वरुण की माँ ने कहा। यह मुझे बिजली के करंट जैसा लगा! मैं खुद से दुखी और नाराज था क्योंकि मुझे एहसास हुआ कि मैं ही उसके इस व्यवहार के लिए जिम्मेदार था। मैंने पहल करके वरुण की बातों को सुना और विनम्रता से कहा कि मैं उसे अनुपस्थित रहने के लिए दंडित नहीं करूंगा और उसका जो भी कार्य छूट गया है, उसे करने के लिए अतिरिक्त समय भी दूंगा। धीरे-धीरे, मैंने यह देखना शुरू कर दिया कि छात्रों की मेरे साथ निकटता बढ़ रही थी और दूसरों के साथ भी मेरे संबंध बेहतर हुए, और मैंने ऐसा हर जगह देखा- फिर चाहे कक्षा में बच्चे हों या घर पर मेरा परिवार!

विरोधाभासी व्यवहार से परे देखना

हिंदी के एक शिक्षक जिन्हें 12 वर्षों का अनुभव है और कक्षा आठवीं से दसवीं को एक सरकारी हाई स्कूल में पढ़ाते हैं।

कक्षा प्रबंधन के तरीकों को समय के साथ बदलना जरुरी होता है, क्योंकि आज दसवीं कक्षा में पढ़ने वाले बच्चों का ज्ञान और व्यवहार आज से पांच साल पहले के बच्चों की तुलना में काफी अलग है। मेरे लिए उनकी भावनाओं को समझना और उनसे जुड़ पाना मुश्किल हो रहा था।

ड्रीम ए ड्रीम द्वारा आयोजित कार्यशाला के दौरान, मैंने सीखा व समझा कि मैं कक्षा में जो भी भावनाएं प्रदर्शित करता हूँ, मेरी वह भावनाएं छात्रों को बहुत ज्यादा प्रभावित करती है। मुझे यह भी आभास हुआ कि अधिकांश समय मैं एक गंभीर और कठोर भावना के साथ कक्षा में प्रवेश करता था, ताकि मैं बच्चों को यह महसूस करा सकूं कि वे मुझे चुपचाप सुनें, बल्कि मैंने अपने छात्रों के बीच भेदभाव भी किया, उच्च परीक्षा परिणाम प्राप्त करने वालों को विशेष तरजीह दी। कार्यशाला के बाद से मैंने सभी छात्रों को उनके व्यवहार से परे देखकर उनकी ज़रूरतों को समझने के लिए पूरी कोशिश करने का संकल्प लिया।

दसवीं कक्षा का एक छात्र गणेश, स्कूल से लंबे समय से अनुपस्थित रहने और गलियों में घूमने में समय गुज़ारने के लिए जाना जाता था। एक दिन, मुझे स्कूल के समय के दौरान ही एक दुकानदार का फोन आया, मुझे ये बताने के लिए की गणेश उसकी दुकान के सामने था। मैंने जल्दी से अपने सहकर्मी की मदद ली और जाकर उसे स्कूल ले आया और उससे उसकी अनुपस्थिति का कारण पूछा। जैसी मैंने उससे अपेक्षा की थी, वह असभ्य तरीके से उत्तर दे रहा था। मैंने अपने गुस्से को नियंत्रित किया और फिर धैर्यपूर्वक उसे बताने के लिए कहा कि वह क्या कर रहा था? वह टूट गया और उसने सब कुछ बताया। अगले दिन, मैं गणेश का एक नया अवतार देख रहा था। मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि वह अब नियमित रूप से स्कूल आता है।

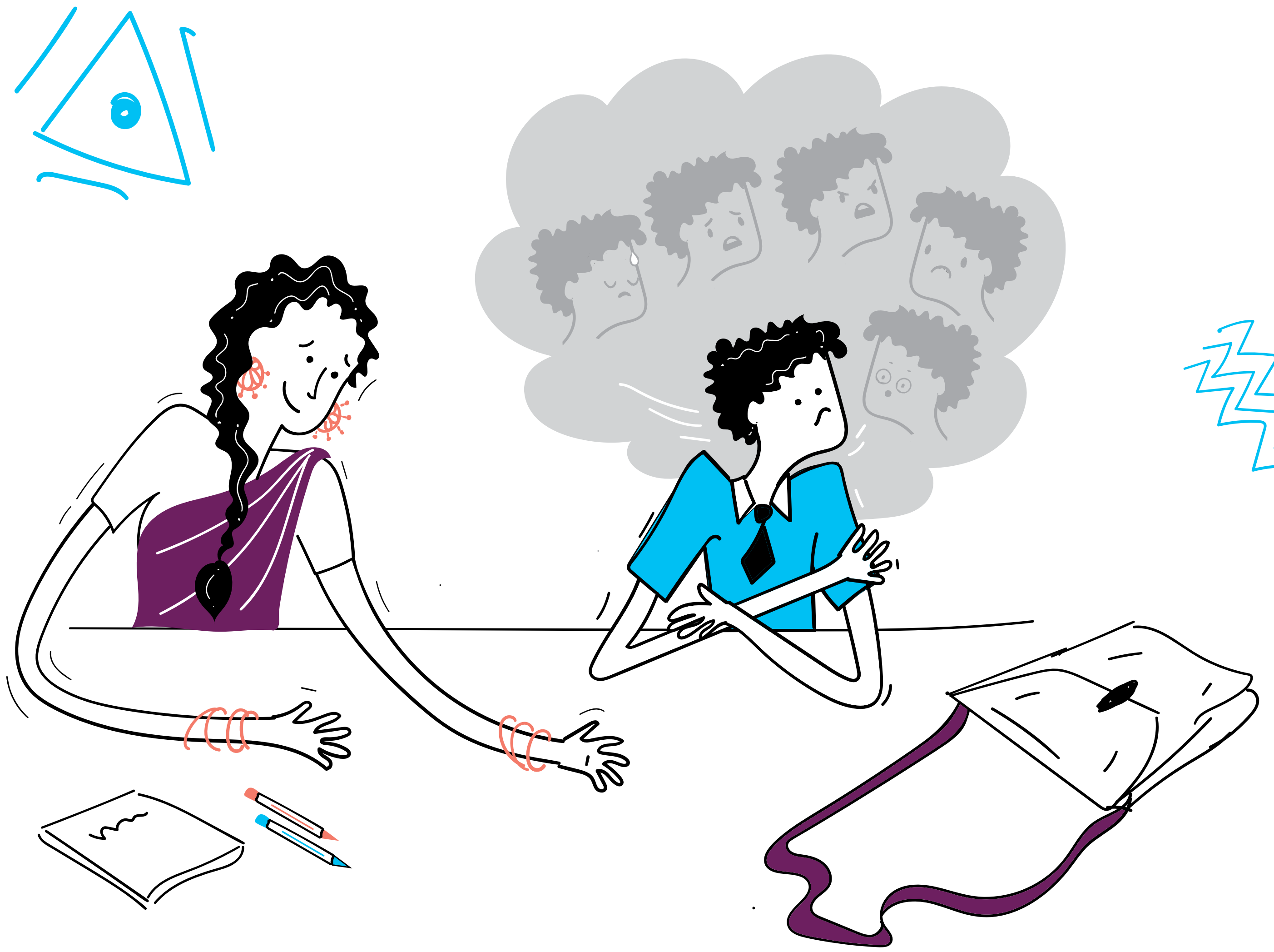

समानुभूति की गूंज घर और कक्षा दोनों में होती है।

सभी विषय पढ़ाने वाले एक शिक्षक जिन्हें 15 वर्षों का अनुभव है और एक सरकारी प्राथमिक विद्यालय में कक्षा पहली से पाँचवी तक पढ़ाते हैं।

एक शिक्षक के रूप में मेरा ध्यान पाठ्यक्रम को समय पर पूरा करना और अच्छे परिणाम सुनिश्चित करना था। मैं हमेशा से आलोचनात्मक रहा और छात्रों के अंकों पर निगरानी रखती थी। मैंने अपने छात्रों को उनकी भावनाओं और विचारों को साझा करने के लिए जगह नहीं दी। "सकारात्मक होना" और "समानुभूतिपूर्ण होना" यह दो अवधारणाएं हैं जो ड्रीम अ ड्रीम द्वारा आयोजित कार्यशाला में भाग लेने के बाद मेरे साथ रहीं और मैंने अपने अंदर एक आवाज़ सुनी कि, "मुझे बदलने की ज़रुरत है!"

घर पर, मैं जानबूझकर अपने बच्चों के पास बैठकर उनके साथ समय बिताती हूँ, और वे अपनी भावनाएं मेरे समक्ष व्यक्त करते हैं। उन्होंने अपनी इच्छाओं के बारे में और भविष्य में वे क्या करना चाहते हैं, इसके बारे में भी बताना शुरू कर दिया है, जिसके बारे में न मैंने पहले कभी सोचा और न ही चिंतित हुआ करती थी और मैं इस सोच में डूबी रहती कि मैंने अपने बच्चों में अपने बीच यह दूरी क्यों बनाई हुई थी| मैं तब विचारों से निकली जब मेरे बेटे ने कहा, "अम्मा, तुम बदल गई हो, अब तुम हमारी बात सुनती हो।"

स्कूल में मेरा एक छात्र विशेष-आवश्यकता वाला बच्चा है। उसके आत्मविश्वास के निर्माण और उसे उसके सीखने के स्तर तक पहुँचाने में मदद के लिए किए गए मेरे प्रयासों से मुझे एक शिक्षक के तौर पर आत्मविश्वास की अनुभूति हुई। मैं उसके माता-पिता के पास पहुंची और उनसे उस छात्र के बेहतर प्रदर्शन करने के लिए समर्थन देने को कहा। आस-पास के लोगों के लिए सकारात्मक और सहानुभूतिपूर्ण होने के नाते, मुझे लगता है कि मैंने छात्रों और उनके माता-पिता दोनों के लिए एक भयरहित वातावरण बनाया है, ताकि वे खुद को और अपनी भावनाओं को खुलकर साझा कर सकें।

सन्दर्भदाता के रूप में विकसित होकर, कक्षा कक्ष में शिक्षण को सुगम बना पाना

गणित और विज्ञान के शिक्षक जिन्हें 23 वर्षों का अनुभव है और कक्षा पांचवी से सातवीं को एक कम फीस वाले प्राइवेट स्कूल में पढ़ाते हैं।

विज्ञान में स्नातक होने की वजह से, मुझे विज्ञान और गणित पढ़ाना पसंद है और मैं अपने पेशे से प्यार करता हूँ, क्योंकि इसमें बच्चों के साथ काम करना शामिल है। हालाँकि मुझे बच्चे बहुत पसंद हैं, पर कई बार जब मैं उनसे तंग आ जाता था, तो मैं उन्हें डाँटता था। ड्रीम अ ड्रीम द्वारा आयोजित कार्यशाला ने मुझे एक गहरे स्तर पर एक बच्चे के दिमाग को समझने में मदद की और तब से मैंने अपने सुनने और मानने के कौशल को विकसित करने पर काम किया है। बच्चे इसे स्पष्ट रूप से नहीं बता सकते हैं, लेकिन जब पढ़ाई के साथ गतिविधियाँ और मज़ेदार चीज़ें की जाती हैं तो उन्हें सीखने में भी मज़ा आता है।

अब मैं उन्हें ज्यादा रचनात्मक रूप से पाठ सिखाता हूँ। मैं पहले प्रत्येक पाठ के लिए गतिविधियाँ तैयार करता हूँ और फिर स्कूल जाता हूँ। मैं कभी-कभी कक्षा को विभिन्न भूमिकाओं में बदल देता हूँ। उदाहरण के लिए: कक्षा 5 के लिए, मैं नैतिक शिक्षा पर बैठक आयोजित करता हूँ जिसमें मैं बच्चों को कक्षा में पाठ पढ़ाने देता हूँ और खुद एक छात्र बन जाता हूँ। बच्चों को यह बदलाव बहुत पसंद आया! मैं देख सकता था कि बच्चे नए पाठ तैयार कर सकते हैं, जो की काफी दिलचस्प थे और मुझे यह देखकर खुशी हो रही थी कि बैठक का नेतृत्व करते हुए बच्चों के चेहरों पर गर्व का भाव था। साथ ही मैंने यह भी देखा कि बच्चों में आत्मविश्वास का स्तर बढ़ गया है।

आजकल मैं उन्हें अपने जीवन की कहानियों से प्रेरित करता हूँ। उन्हें लगता है कि मैं उनके लिए आसानी से और हमेशा मौजूद हूँ और वे मेरे साथ ज्यादा खुला और सहज महसूस करते हैं। कभी-कभी मैं यह भी सुनिश्चित करता हूँ कि छात्र दूसरे विषयाध्यापक द्वारा दिए गए गृहकार्य से तनाव में तो नहीं हैं। मैं विषयाध्यापकों से मिलता हूँ व उनसे चर्चा करके हर विषय के लिए एक खास दिन निर्धारित करता हूँ।

नए उद्देश्य के साथ पढ़ाना

गणित के शिक्षक जिन्हें 7 वर्षों का अनुभव है और कक्षा आठवीं से दसवीं को एक कम फीस वाले प्राइवेट स्कूल में पढ़ाते हैं।

बी.एड. पूरा करने के बाद मैंने एक शिक्षक के तौर पर काम करना शुरू किया और मेरा ध्यान केवल उनके शैक्षिक पाठ्यक्रम पर होता था| कैसे मैं छात्रों को परीक्षा में अच्छे अंको से पास करवा सकता हूँ और कैसे मैं यह विशाल सिलेबस जो मुझे दिया गया है, उसे समय पर पूरा कर पाऊं? ड्रीम अ ड्रीम द्वारा आयोजित कार्यशालाओं में भाग लेने के बाद, मेरे दृष्टिकोण में बदलाव आया। मैंने खुद से पूछा, "एक शिक्षक के रूप में मेरा उद्देश्य क्या है? क्या वास्तव में केवल सिलेबस को पूरा कराना ही मेरा उद्देश्य है या फिर कुछ और?" यह सवाल मेरे भीतर एक बहुत बड़ा बदलाव लेकर आया और मैंने अपनी कक्षा में बच्चों के भीतर जिज्ञासा पैदा करना शुरू किया।

अब मैं आमतौर पर पाठ के अंत में पूछता हूँ कि क्या उनके पास कोई ऐसा प्रश्न हैं जो मैंने पहले कभी नहीं पूछा। इससे उनके मन में मुझसे सवाल पूछने के लिए एक जगह बनी है। इसके अलावा, मैं अब अपने अंदर और ज्यादा ऊर्जा लाता हूँ और मैंने पाया कि जब मैं ऐसा करता हूँ, तो बच्चे अधिक ऊर्जावान महसूस करते हैं।

साथ ही मैंने खुद को एक गहरे स्तर पर समझने के महत्व को समझा| पहली बार, मैंने अपनी ताकत को पहचानने के लिए यात्रा शुरू की। मैंने पहचाना की मेरी हीन भावना ने मुझे मेरे विचारों को अपने साथियों के साथ खुलकर साझा करने से रोक रखा था। मुझे लगातार यही चिंता थी कि दूसरे मेरे बारे में क्या सोचते हैं? प्रशिक्षकों का यह विश्वास था की मैं जो कुछ भी साझा करता हूँ वह मेरे खुद के ज्ञान से एक कदम आगे है। अब मैं अन्य शिक्षकों से बात करता हूँ और अपने विचारों को आत्मविश्वास से साझा करता हूँ। इन कार्यशालाओं से मुझे इस उद्देश्य की भावना वापस मिली कि- मैं एक शिक्षक हूँ और मुझे इस बात पर गर्व है।

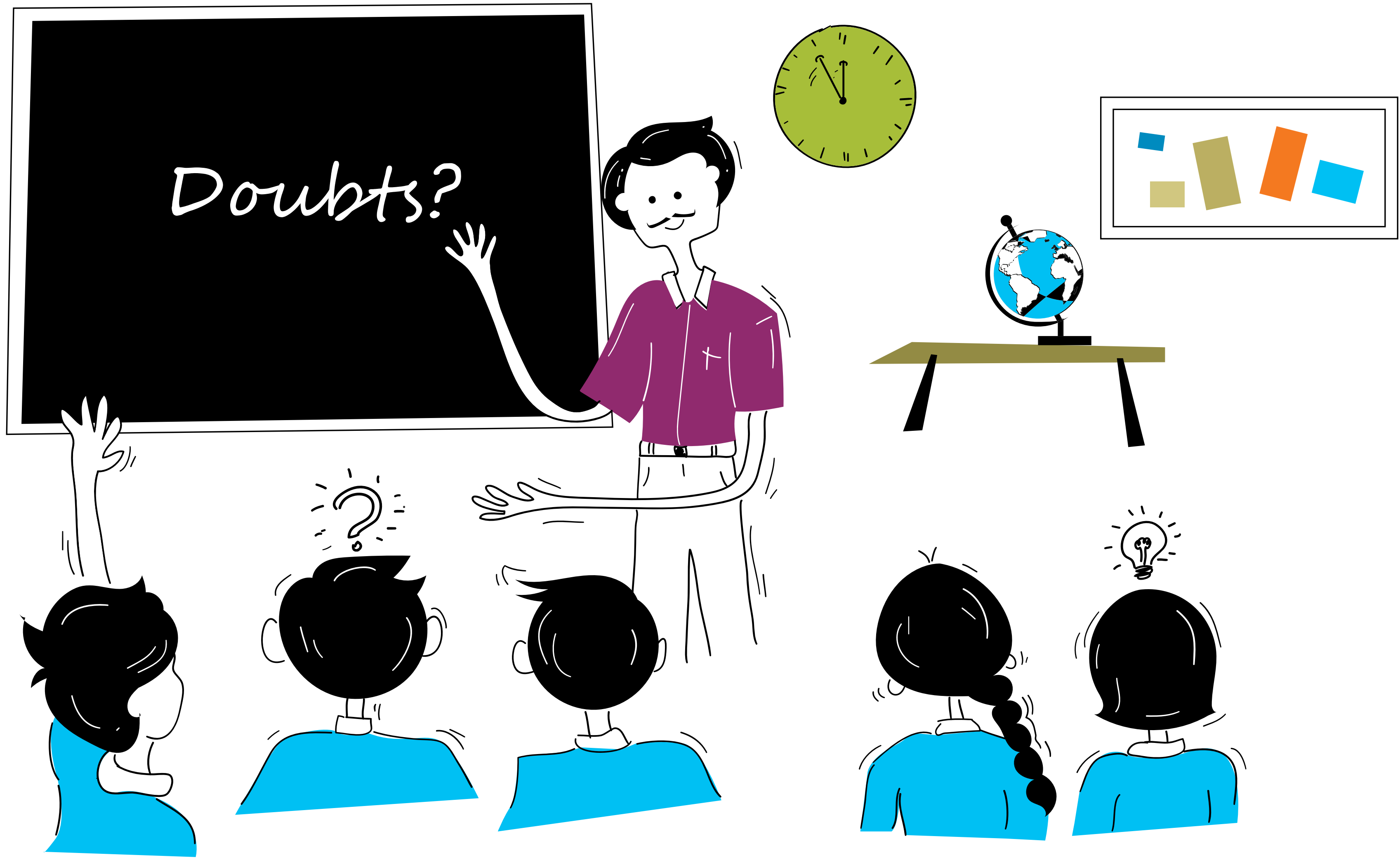

कक्षा से परे बच्चों के साथ जुड़ना

अंग्रेजी के शिक्षक जिन्हें 15 वर्षों का अनुभव है और कक्षा दसवीं को एक कम फीस वाले प्राइवेट स्कूल में पढ़ाते हैं।

मैं छात्रों से दूरी बनाए रखने में विश्वास करता था। ड्रीम अ ड्रीम द्वारा आयोजित कार्यशाला में भाग लेने के बाद, मैंने महसूस किया कि मुझे अपने चेहरे पर गंभीर भाव रखकर बच्चों को नहीं देखना चाहिए और कक्षा से परे बच्चों से निकटता बढ़ानी चाहिए। मुझे आश्चर्य हुआ कि, मुझे और बच्चों को करीब आने में काफी समय लगा। बच्चे मुझसे बात करने में संकोच कर रहे थे।

कार्यशाला के बाद, मैंने प्रतिक्रिया देने के एक अलग तरीके के बारे में सीखा - “कनेक्ट-डिसकनेक्ट-कनेक्ट”। जिसमें मैं विश्वसनीय सकारात्मक टिप्पणियों के बीच आलोचनात्मक प्रतिक्रिया को सैंडविच करता हूँ। मैंने स्वाति के साथ नया दृष्टिकोण अपनाने की कोशिश की, जिन्हें स्लेट खाने की आदत थी। मैं दोपहर के भोजन के दौरान और कक्षा खत्म होने के बाद उसके साथ बैठ गया ताकि उसके परिवार और उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में जान सकूं। इस दृष्टिकोण ने उसे स्लेट खाने से रोकने में मदद करना आसान बना दिया था। मैंने उसे समझाने की कोशिश की और उसके आत्मविश्वास और उसके गुणों की सराहना की। मैं देख सकता था कि हमारा बंधन हर दिन मजबूत हो रहा था। मैंने उसे सुझाव दिया कि जब भी उसे स्लेट खाने का मन करे तो वह गुड़ खाए। एक दिन, स्वाति ने मुझे खुशी से बताया कि उसने स्लेट खाना बंद कर दिया है।

मुझे आभास हुआ कि मैंने हमेशा पहले “डिस्कनेक्ट” पर अपना ध्यान केंद्रित किया था। अब मैं अपनी सारी कक्षाओं में नए दृष्टिकोण को लागू कर रहा हूँ और मैं आसानी से बच्चों की सराहना कर सकता हूँ और उनके सकारात्मक पक्ष देख सकता हूँ। आखिरकार इन कुछ वर्षों से, मैं एक संदर्भदाता के रूप में एक शिक्षक के महत्व और भूमिका को महसूस कर रहा हूँ।

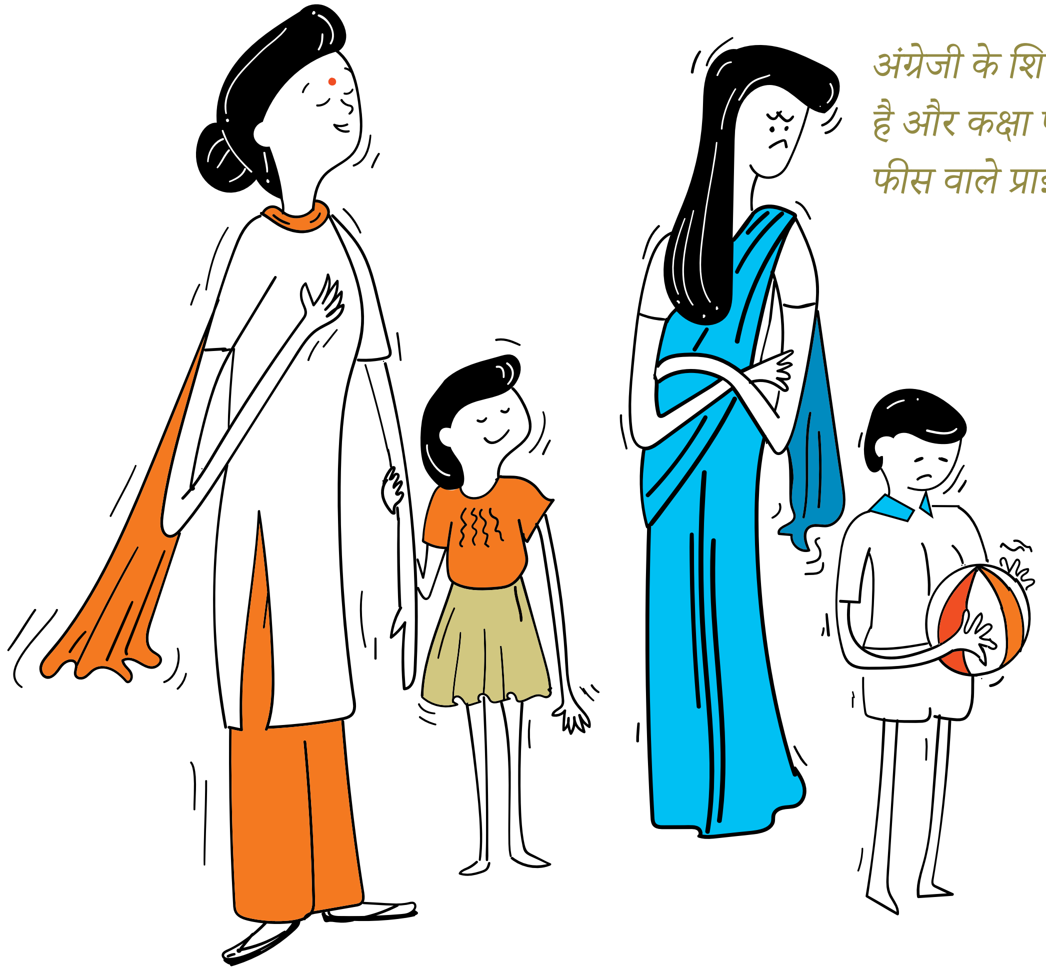

तुलना करना छोड़कर अभिप्रेरणा और प्रदर्शन को बढ़ावा देना

अंग्रेजी के शिक्षक जिन्हें 10 वर्षों का अनुभव है और कक्षा पहली से तीसरी को एक कम फीस वाले प्राइवेट स्कूल में पढ़ाती हैं।

मेरा बेटा हमेशा से पढ़ाई में औसत से कम ही रहा है। जब भी हमें अभिभावक-शिक्षक की बैठक के लिए बुलाया जाता था, न तो मेरे पति और न ही मैं वहां जाती थी, क्योंकि हम जानते थे कि वे केवल हमारे बच्चे की कमियों के बारे में बात करेंगे।

जब मैंने ड्रीम अ ड्रीम द्वारा आयोजित कार्यशाला में भाग लिया, तो मुझे बच्चे के मन को समझने का मौका मिला और यह भी जाना कि यदि सही समय पर देखभाल ना की गई तो बच्चे को भावनात्मक उथल-पुथल से गुजरना पड़ेगा। मैं आश्चर्य में थी कि मेरे बड़े होते हुए बेटे को कैसा महसूस हो रहा होगा, उसका स्कूल और घर पर मिले दबावों का सामना करने के लिए कितना संघर्ष रहा होगा। अपने बेटे की तुलना अन्य छात्रों, जिन्होंने मेरी कक्षा में हर समय अच्छा प्रदर्शन किया, उनके साथ करके मैंने अनजाने में ही उसे बहुत छोटा महसूस कराया। पश्चात्ताप की पीड़ा मेरे भीतर दौड़ गई। मैं उसकी बातें सुनने लगी, जो मैंने पहले नहीं किया था। वह जो हासिल कर रहा था उस पर ध्यान देने लगी और उसे जिम्मेदारियां सौंपने लगी, मैंने उसे दर्शाया कि मैंने उस पर भरोसा किया है। मैं उसकी तरफ से खड़ी रही और जब भी मुझे मौका मिला उसे प्रोत्साहित किया। समय के साथ, मुझे उसमें बदलाव नज़र आने लगे। उसने अपने स्कूल की परीक्षा में 95% स्कोर किया| यहां तक कि उसके शिक्षक भी हैरान थे, क्योंकि हमारी तरह ही वे भी उसे निम्न-प्रदर्शन करने वालों में से ही एक मानते थे।

इससे मुझे लगा कि मेरे छात्रों के माता-पिता, जिनके बच्चे निम्न-प्रदर्शन करते हैं, वे कैसा महसूस करते होंगे- जब हम उनके बच्चों के बारे में सिर्फ नकारात्मक बातें कहते हैं। मैं समझ गई कि एक शिक्षक की सच्ची भूमिका यह समझना है कि एक बच्चे को आगे बढ़ने के लिए क्या चाहिए और उसे अपनी ओर से आवश्यक सहयोग देना है।

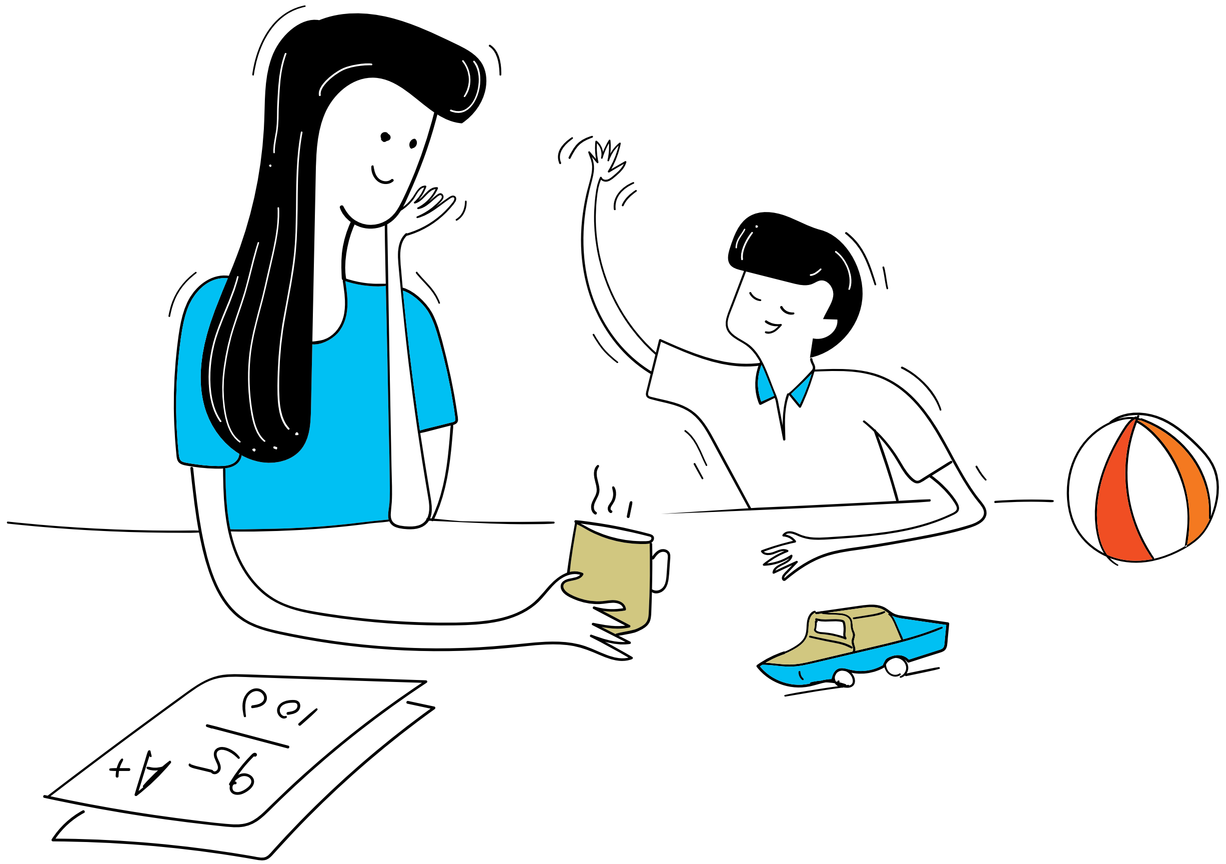

आचरण में छिपी आवश्यकता को पहचानना

सामाजिक विज्ञान और अंग्रेजी के शिक्षक जिन्हें 8 वर्षों का अनुभव है और कक्षा पहली से पांचवीं को एक कम फीस वाले प्राइवेट स्कूल में पढ़ाते हैं।

हर्षवर्धन एक अतिसक्रिय और मदद करने वाला लड़का था जिसकी पढ़ाई में दिलचस्पी नहीं थी। उसके माता-पिता और शिक्षकों ने उसका बहुत समर्थन किया, लेकिन वे उसे शैक्षिक रूप से अच्छा नहीं बना पाए। शिक्षकों और माता-पिता का उसके प्रति चिंता करना उसे एक बड़ा बोझ लगता था। कोई भी उसकी समस्या को समझ नहीं पाया। वह तंग आ गया था और एक बार क्लास टेस्ट के दौरान जानबूझकर उसने अपना हाथ काट लिया। मैं हैरान रह गया। मैंने उनके माता-पिता से बात की और मुझे पता चला कि ठीक से पढ़ाई न करने की वजह से उसे घर पर पीटा गया था और वह घर छोड़ने को भी तैयार था।

ड्रीम अ ड्रीम द्वारा आयोजित कार्यशाला के दौरान, मैंने सुनने और पुष्टि करने के कौशल के बारे में सीखा। इससे मुझे हर्षवर्धन और उसके माता-पिता के साथ सहानुभूति रखने में मदद मिली। मैंने उसकी बात सुनना शुरू कर दिया और वह अपनी परेशानियां मुझे खुलकर बताने लगा। उसने कहा, 'मैं खुद से तंग आ चुका हूँ और मुझे नहीं पता कि मैं क्यों नहीं पढ़ पा रहा हूँ।' मैंने उसे अक्षर ज्ञान देना शुरू किया और उसके व्यवहार में तथा शिक्षकों और माता-पिता के साथ उसके बातचीत करने के तरीके में भी सकारात्मक सुधार देखे। मैं भी यह बदलाव देखकर हैरान और खुश था। अब वह अपना श्रेष्ठ देने की कोशिश करता है। मैं बच्चों के भावनात्मक समर्थन और पुष्टिकरण की आवश्यकता की पहचान करके खुश और संतुष्ट हूँ।

“किशोरावस्था” वार्तालापों को सामान्य करके चुप्पी को तोड़ना

अंग्रेजी के शिक्षक जिन्हें 12 वर्षों का अनुभव है और कक्षा आठवीं से दसवीं को एक कम फीस वाले प्राइवेट स्कूल में पढ़ाते हैं।

मुझे “किशोरावस्था” के बारे में सत्र आयोजित करने की अतिरिक्त जिम्मेदारी दी गई थी। मेरे लिए अब तक के लिए यह एक अलग विषय था। हालांकि, ड्रीम अ ड्रीम द्वारा आयोजित कार्यशाला में भाग लेने के बाद, मैंने छात्रों को एक नए लेंस से देखा जिससे मैं उनकी भावनाओं, आशंकाओं और भ्रमों को स्पष्ट तौर पर देख पा रहा था।

कक्षा 8 के कुछ लड़कों ने मुझसे अपनी सहपाठी रोजी के बारे में शिकायत की। वे उसके द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली भाषा से परेशान थे। मुझे पता था कि वह एक अच्छी छात्रा थी और फिर मैंने उसके व्यवहार और बातचीत का निरीक्षण किया। अगले सत्र में मैंने कहा, कि इस उम्र में शारीरिक आकर्षण और दूसरे सेक्स के बारे में जानना गलत नहीं है। मैंने किशोरावस्था के दौरान ‘एक दुसरे के प्रति उत्पन्न आकर्षण’ के बारे में भी बात की। मैंने अपनी किशोरावस्था की कहानी और अनजाने में की गई गलतियों को साझा करके इस विषय को सामान्य बनाया। बाद में मैंने रोजी के साथ सहानुभूति व्यक्त की और उसकी भावनाओं एवं व्यवहार को सामान्य से बात के रूप में स्थापित किया। मुझे पता चला कि वह अपने दोस्तों के साथ अश्लील वीडियो देखती थी, जिससे स्कूल में उसका व्यवहार प्रभावित होता था। मैंने उससे कहा कि किसी भी इंसान को जीवन के इस पक्ष को बेहतर रूप से जीने के लिए शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से पूरी तरह से विकसित होना चाहिए। वह समझ गई और उसने कहा कि वह अपनी पढ़ाई पर ध्यान देगी।

एक शिक्षक के रूप में, मुझे जल्दी गुस्सा आता था। मैंने लोगों को अपने विचार साझा करने के लिए कभी स्थान नहीं दिया। घर पर मेरे परिवार के सदस्यों के साथ मेरी बहुत बार झड़पें हुईं। कार्यशाला के बाद मैंने सीखा, कि भावनाओं को कैसे नियंत्रित किया जाए। “जीवन की नदी” गतिविधि के दौरान, मुझे आभास हुआ कि मैं ही अकेला नहीं था, जिसे समस्याएं थीं। अब अपने परिवार के साथ समय बिताता हूँ, जो मैं पहले नहीं करता था। मैंने धैर्य और सहानुभूति रखना सीखा है।

रचनात्मकता और मनोरंजक चीज़ें करने से छात्रों की व्यस्तता बढ़ती है।

सामाजिक विज्ञान के शिक्षक जिन्हें 8 वर्षों का अनुभव है और कक्षा छठी से दसवीं को एक एनजीओ में पढ़ाते हैं।

मेरी कक्षा में छात्र विभिन्न पृष्ठभूमियों से आते हैं। कक्षा में बड़े छात्र-छात्राओं को व्यस्त रखना मेरे लिए एक बड़ी चुनौती रही है। उन्हें कक्षा में ऊबने और अरुचिकर होने से कैसे बचाया जा सकता है? ड्रीम अ ड्रीम द्वारा आयोजित कार्यशाला ने मुझे मजेदार गतिविधियों के माध्यम से अपनी कक्षा में नवीनता और रचनात्मकता लाने में मदद की।

एक चीज जो मैंने शामिल की, वह है "एक-ताल" गतिविधि जिसे बच्चे बहुत पसंद करते हैं और इसकी वजह से कक्षा में ज्यादा रुचि लेते हैं। एक-ताल का उद्देश्य कक्षा शुरू होने से पहले छात्रों को ऊर्जावान और समकालिक बनाना है। एक और गतिविधि जो मुझे वास्तव में मज़ेदार लगी, वह थी कहानी और ड्राइंग, जिसमें एक व्यक्ति कहानी सुनाता है और दूसरा व्यक्ति कहानी के अनुसार चित्र बनाता है। एक सामाजिक विज्ञान शिक्षक के तौर पर, मैंने इतिहास में एक विषय पर पढ़ाते हुए इस गतिविधि को आज़माया। मैंने एक पाठ लिया, उसे ज़ोर से पढ़ा और छात्रों से कहा कि वे मुझे सुनें व इसकी कल्पना करें और फिर जो भी उनके दिमाग में आए उसका चित्र बनाएं। इससे कई छात्रों को लंबे समय तक पाठ याद रखने में मदद मिली। मैं समझ गया था कि वे केवल अपने भावों को देखने में व्यस्त थे।

एक आम व्यक्ति की तरह, मुझे हमेशा दूसरों से बात करने, खुलकर अपनी कहानी साझा करने से थोड़ा डर लगता था। कार्यशाला के दौरान संदर्भदाता द्वारा जो सुरक्षित स्थान बनाया गया था, उसने मुझे बहुत सहज महसूस कराया और "थिएटर" की गतिविधि के समय मैं भूल गया, कि मैं एक वयस्क था और मैं फिर से जैसे एक बच्चा बन गया! मेरा खुद पर विश्वास काफी बढ़ गया है।

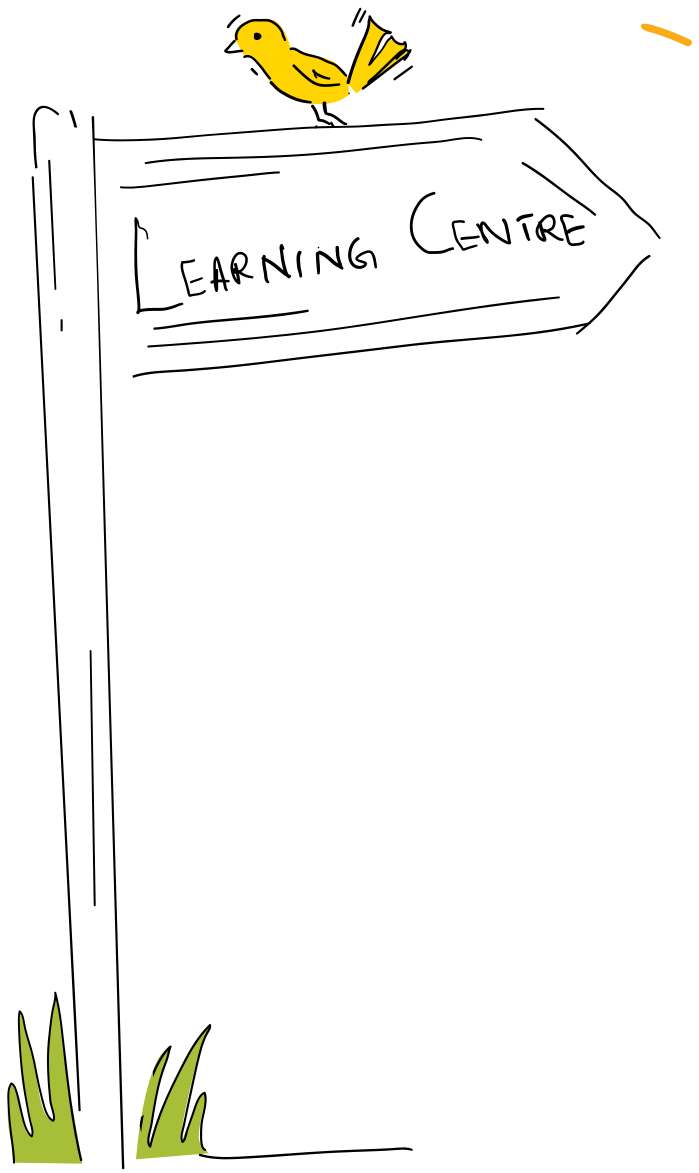

समानुभूति और व्यक्तिगत ध्यान के माध्यम से रुचि को बढ़ावा देना

सामाजिक विज्ञान के शिक्षक जिन्हें 2 वर्षों का अनुभव है और कक्षा छठी से आठवीं को एक अध्ययन केंद्र में पढ़ाते हैं।

लर्निंग सेंटर में एक शिक्षक के रूप में मेरी भूमिका, बच्चों की समीक्षा करने में मदद करना है कि उन्होंने स्कूल में क्या सीखा है और होमवर्क पूरा किया है या नहीं। ड्रीम अ ड्रीम द्वारा आयोजित कार्यशाला में भाग लेने के बाद, मुझे महसूस हुआ कि मैं अधीर था और बच्चों को अपना काम पूरा करने के लिए ही सहायता कर रहा था और सहानुभूति को समझने, सुनने और प्रदर्शित करने तक नहीं जा रहा था। मैंने सीखा कि हर बच्चा अद्वितीय है और उसी के अनुसार उससे व्यवहार किया जाना चाहिए।

एक छात्र मनोहर, लर्निंग सेंटर में बहुत अनियमित था। मुझे पता था कि जब से उसने एक नए स्कूल में दाखिला लिया, तभी से पढ़ाई में रुचि खो दी थी। एक दिन, मैं उसके साथ बैठा और उसकी परेशानियों को समझने की कोशिश की, जिनकी वजह से वह अनियमित रहता है। मुझे पता चला कि उसे पारिवारिक समस्याएं थीं। मैंने उसे यह पूछकर प्रेरित करने की कोशिश की, कि जब उसकी मां परिवार हेतु कमाने के लिए संघर्ष करती है, तो उसे एक बेटे के रूप में उसकी जिम्मेदारी समझनी चाहिए।

मैंने बोर्ड पर सभी अक्षर लिखे और उसे अपने नाम 'मनोहर' के अक्षरों को पहचानना सिखाया। धीरे-धीरे वह पहचानने लगा और उसे लिखने की भी कोशिश करने लगा। जब वह अपना नाम पढ़ने और लिखने लगा, तो मैंने उसकी आँखों में खुशी देखी। उसे रोज़ाना अपना नाम बोर्ड पर लिखना पसंद था। उसने अपनी माँ का नाम भी लिखने की कोशिश की जो उसके दिल के करीब थीं। अब, वह कक्षाओं में ज्यादा नियमित रहता है और मुझसे प्रश्न पूछने की कोशिश भी करता है। मेरी सबसे बड़ी सीख यह है कि मुझे बच्चों को नियंत्रित नहीं करना चाहिए बल्कि उनकी भावनाओं की कद्र करते हुए उनका प्रबंधन करना चाहिए।

छड़ी का उपयोग किए बिना कक्षा का संचालन

शिक्षक जिन्हें 7 वर्षों का अनुभव है और कक्षा तीसरी को एक कम फीस वाले प्राइवेट स्कूल में सभी विषय पढ़ाते हैं।

तीसरी कक्षा के छात्रों को पढ़ाना मेरे लिए थकाऊ था और मैंने अक्सर कक्षा में बच्चों को डराने के लिए छड़ी का सहारा लिया। मुझे लगा कि यह मेरी कक्षा को नियंत्रित करने का एकमात्र तरीका है। मैंने कभी अपने छात्रों की बात नहीं सुनी और न ही उनसे कभी जुड़ा।

ड्रीम अ ड्रीम द्वारा आयोजित एक कार्यशाला के दौरान, मैंने 'सुनना और न सुनना' गतिविधि में भाग लिया, जहां मेरी किसी के साथ जोड़ी बनाई गई थी और हमें उन घटनाओं को साझा करने के निर्देश दिए गए थे, जिनसे हम गहराई से प्रभावित हुए थे। हालाँकि मैंने उसे सुनने के लिए मनाने की बहुत कोशिश की, लेकिन मेरा साथी नहीं माना। आखिरकार, मैंने उसे छोड़ दिया और उससे अलग होकर चुपचाप बैठ गया। बाद में, मैंने यह सोचना शुरू कर दिया कि मेरे छात्रों को कैसा लगता होगा जब वे मुझसे बात करने की कोशिश करते थे, और मैं नहीं सुनता था। मैंने न केवल उनकी बात सुनने से मना किया, बल्कि उनके साथ कठोरता से बात की थी। मैंने अपने अनुभव किए गए दर्द को छात्रों के दर्द के साथ जोड़ना शुरू कर दिया।

अपने व्यवहार को बदलने के लिए मैंने दृढ़ संकल्प लिया और छात्रों को अनुशासित करने के लिए छड़ी का उपयोग करना बंद कर दिया। मैंने उन्हें कहानियां सुनाना शुरू किया, छात्रों को उनका कार्य पूरा करने के लिए प्रोत्साहित किया और सराहना की, अब मैं उनके साथ ज्यादा जुड़ने लगा हूँ । मैंने उनके विचारों और राय को खुलकर साझा करने के लिए एक मंच बनाया। मेरे छात्र अब जानते हैं कि मैं उन्हें नहीं मारूँगा। हालांकि, इससे वे और भी शरारती हो गए हैं! मैं अब अपनी कक्षा की तैयारी के लिए कड़ी मेहनत करता हूँ और छात्रों के साथ सकारात्मक तरीके से जुड़ता हूँ। मैं अपने छात्रों के लिए एक आदर्श बनने की कोशिश कर रहा हूँ।

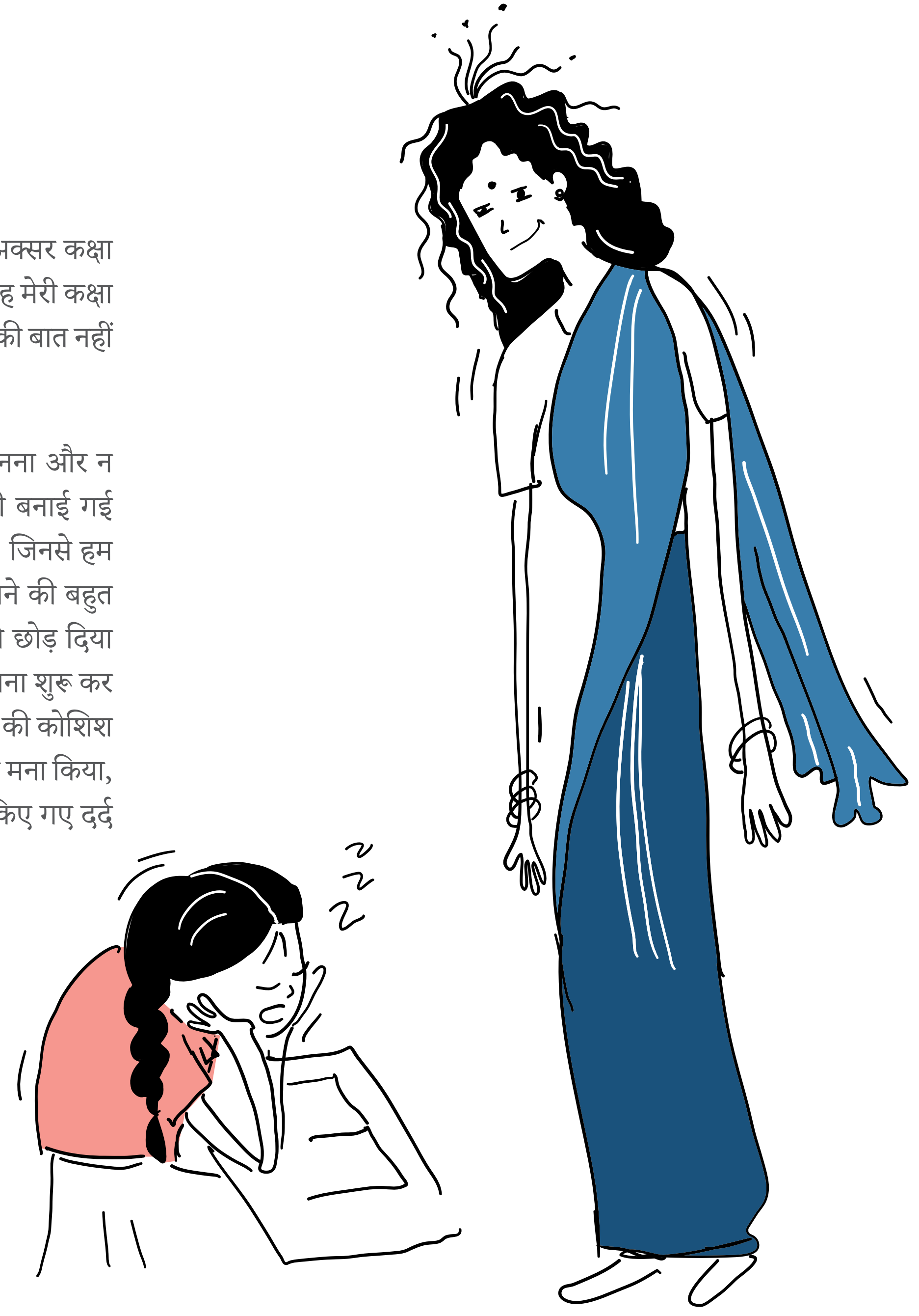

धैर्य के साथ शैक्षणिक और गैर-शैक्षणिक चुनौतियों का समाधान

एक शिक्षक जिन्हें 6 वर्षों का अनुभव है और यूकेजी (UKG) कक्षा को एक कम फीस वाले प्राइवेट स्कूल में पढ़ाते हैं।

यूकेजी में पढ़ने वाले मेरे छात्र बहुत सक्रिय हैं और मुझे उनके साथ रहने के लिए हर समय सतर्क और क्रियाशील रहना पड़ता है । उनमें से एक छात्र, किशोर रोज़ाना पेंसिल और रबड़ जैसी चीज़ों की चोरी किया करता था। मैं और दूसरे शिक्षक भी उससे तंग आ चुके थे।

एक बार, उसने मेरी लाल रंग की पेन चुरा ली और कुछ दिन बाद वही पेन मुझे उपहार के रूप में दिया। मैंने अपनी खोए हुए पेन को पहचान लिया। वह इस बात को नहीं मान रहा था कि उसने उस दिन इसे चुराया था। मुझे ड्रीम अ ड्रीम द्वारा आयोजित कार्यशाला में बताई गई, सुनने और सत्यापन करने की मेरी सीख याद आई। मैंने चोरी करने के उसके कार्य में ताकत और कौशल की पहचान की और उसे एक कहानी से सामान्य किया। फिर उसने शीघ्रता पूर्वक स्वीकार लिया कि उसने मेरा पेन चुराया था।

उसके साथ समय बिताने के बाद, मुझे पता चला कि परिवार में उसे सहयोग करने वाला कोई नहीं था, क्योंकि उसके माता-पिता अनपढ़ थे और इसी का नतीजा था कि वह अपना होमवर्क पूरा नहीं कर पाता था। उसे अपने सहपाठियों द्वारा एक मोटा लड़का कहकर भी परेशान किया जाता था। मैंने धीरे-धीरे उसकी अवधारणाओं को समझाने में मदद की। दिन-ब-दिन हमारा संबंध गहरा होता गया। एक दिन किशोर मेरे पास आया और मुझसे कहा कि वह स्कूल भ्रमण पर नहीं जा सकता, क्योंकि उसकी यूनिफॉर्म फटी हुई थी और उसकी माँ शैक्षणिक वर्ष के अंत में उसे एक नई यूनिफॉर्म खरीद कर नहीं दे सकती थीं। मैंने उसके दोस्त से एक अतिरिक्त यूनिफॉर्म उधार ली, जिसे किशोर ने खुशी-खुशी स्कूल भ्रमण के लिए पहना।

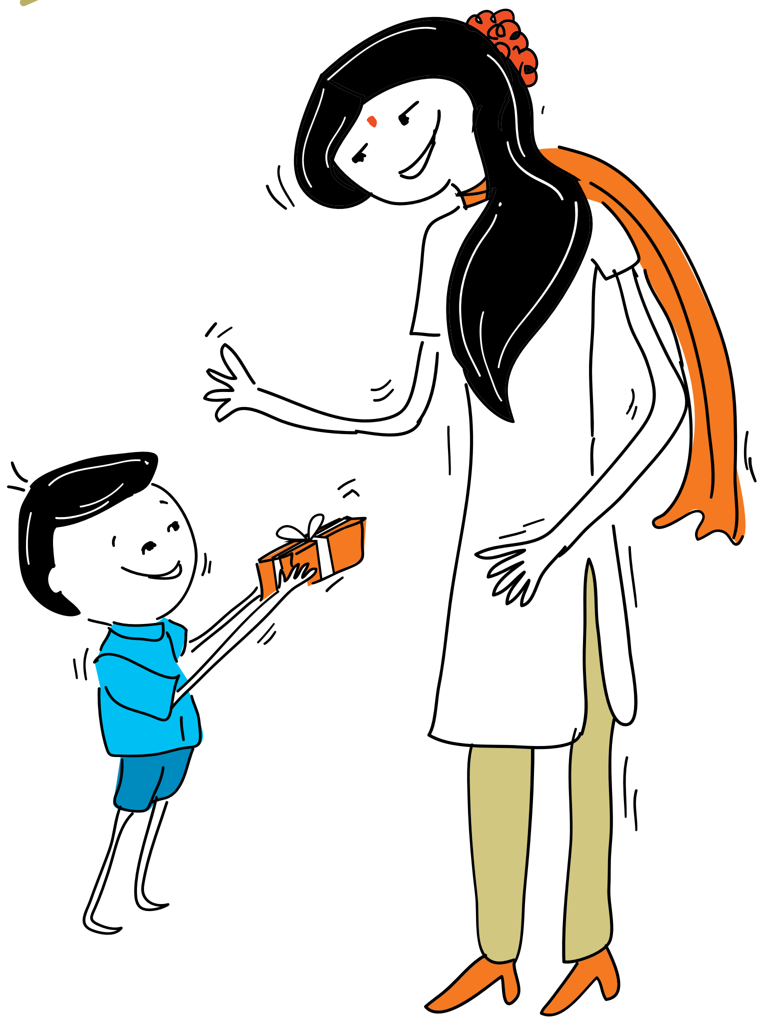

अपनी कहानी के माध्यम से सम्मान प्राप्त करना

हिंदी के शिक्षक जिन्हें 10 वर्षों का अनुभव है और कक्षा नौंवी व दसवीं को एक कम फीस वाले प्राइवेट स्कूल में पढ़ाते हैं।

हमारा स्कूल एक अंग्रेजी माध्यम का स्कूल है, जिसमें ग्रामीण बच्चों के लिए भोजन की सुविधा है। विक्रम का हमारे स्कूल में नया दाखिला हुआ था। उसका आत्मविश्वास कम था। वह किसी भी गतिविधि में भाग नहीं ले रहा था और पढ़ाई में भी अच्छा प्रदर्शन नहीं कर रहा था। मैंने विक्रम के पिछले स्कूल से उसके बारे में जानकारी एकत्रित की और यह जानकर हैरान रह गया कि वह एक बहुत ही सक्रिय बच्चा था, जो सभी सह-शैक्षणिक गतिविधियों में भी भाग लिया करता था। जब मैंने ड्रीम अ ड्रीम द्वारा आयोजित कार्यशाला में भाग लिया, तो मुझे एक बच्चे के साथ जुड़ने के लिए प्रयोग किए जाने वाले पुष्टिकरण के अलग-अलग स्तरों के बारे में पता चला।

विक्रम के साथ समय बिताने के बाद, मुझे पता चला कि उसकी इच्छा के विरुद्ध उसके माता-पिता ने उसका दाखिला कन्नड़ माध्यम के स्कूल से बदलकर एक अंग्रेजी माध्यम स्कूल करवा दिया था। उसने बताया कि वह कन्नड़ को छोड़कर किसी भी विषय में कुछ भी नहीं समझ पा रहा था और रोज़ाना स्कूल आने से बहुत डर रहा था। मैंने उससे अपनी कन्नड़ माध्यम के स्कूल में पढ़ाई करने और फिर स्कूल बदलकर अंग्रेजी माध्यम स्कूल में जाने की कहानी साझा की। मैंने उसे बताया कि यह मुश्किल था, पर संभव था।

मैं अगले दिन खुश और हैरान हुआ, जब विक्रम ने मेरी कक्षा में धाराप्रवाह एक हिंदी कविता सुनाई। उसने कहा कि उसने अपने एक पड़ोसी की मदद ली और कन्नड़ में वह कविता लिखी थी। मैं हैरान था! पहले मैं हर बच्चे से सम्मान की उम्मीद करता था और उनमें भय विकसित करने करके उसे पाना चाह रहा था। अब, मैंने महसूस किया है कि प्यार, पुष्टिकरण और सहानुभूति के माध्यम से, हर बच्चे से सम्मान हासिल करना सरल होता है।

संबंधो को बनाने के लिए क्षमताओं पर ध्यान देना

विज्ञान के शिक्षक जिन्हें 2 वर्षों का अनुभव है और कक्षा छठी को एक कम फीस वाले प्राइवेट स्कूल में पढ़ाते हैं।

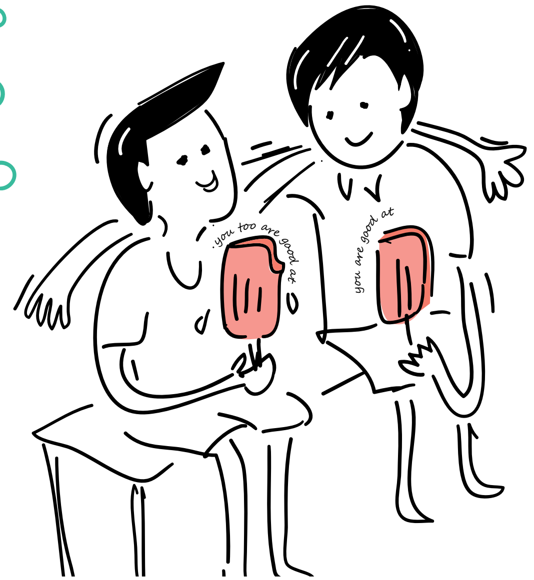

ड्रीम अ ड्रीम द्वारा आयोजित कार्यशाला ने मुझे कई अनुभव और अध्ययन दिए जो मैं हमेशा संजो कर रखूंगा। उनमें से एक अनुभव था, जो की एक थियेटर गतिविधि थी, जिसमें समूह के अन्य लोगों ने मेरे चलने के तरीके को प्रतिबिंबित किया और मुझे बताया कि मेरा चलने का तरीका खास था। यह मेरे लिए एक "वाह" बोलने का पल था क्योंकि तब मैं वास्तव में खुद को विशेष महसूस कर रहा था। सत्र के बाद, मैंने इस अनुभव के बारे में बहुत सोचा और मैं छात्रों को विशेष महसूस करना चाहता था, जैसा की मैंने कार्यशाला में महसूस किया था।

मैंने अपनी कक्षा में इसी गतिविधि को एक छोटे से बदलाव के साथ 6 वीं कक्षा के छात्रों के साथ प्रयोग के तौर पर करने की कोशिश की। मैंने दो छात्रों की जोड़ी को कक्षा के सामने खड़े होने के लिए बुलाया और बाकी छात्रों को उनमें सकारात्मक गुण बताने के निर्देश दिए। सभी छात्रों ने इन बच्चों के सकारात्मक गुणों को बताना शुरु कर दिया। मुझे कक्षा में हर एक बच्चे में सकारात्मक ऊर्जा और खुशी दिखाई दी। मैं उनके बीच विकसित की गई इस गतिविधि को देखकर हैरान और खुश था।

कार्यशाला से पहले, मैंने स्कूल में बच्चों और मेरे बीच दूरी बनाए रखी थी, क्योंकि मुझे लगता था कि एक शिक्षक ऐसा ही होना चाहिए। कार्यशाला के बाद, मैंने सीखा है कि कक्षा में सभी बच्चों को स्थान देने से उनमें बेहतर विकास होता है। मैंने अपनी कक्षा में प्रत्येक बच्चे की सराहना करना शुरु कर दिया और उन्हें होमवर्क सीखने और पूरा करने के लिए भी स्थान देना शुरु कर दिया है। अब मैं गुस्सा नहीं करता हूँ, मैंने उनके कार्यों के पीछे छिपी उनकी भावनाओं को समझना और उनका सम्मान करना सीख लिया है।

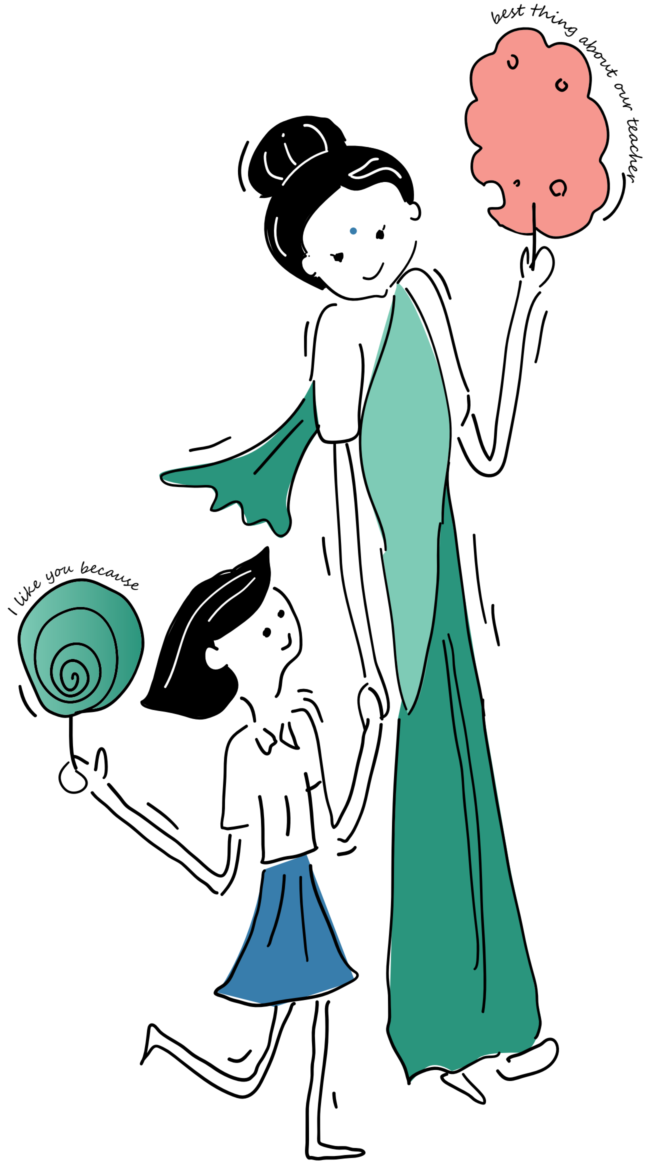

बच्चों की भावनाओं को समझने के लिए उनके व्यवहार को उजागर करना

सभी विषय पढ़ाने वाले एक शिक्षक जिन्हें एक वर्षों का अनुभव है और कक्षा पहली को एक कम फीस वाले प्राइवेट स्कूल में पढ़ाते हैं।

मेरी कक्षा में बच्चों को नियंत्रित करना हमेशा मेरे तनाव का कारण रहता था। जब मैंने ड्रीम अ ड्रीम द्वारा आयोजित कार्यशाला में भाग लिया, तो मैं समझ गया कि बच्चे की हर कार्य के पीछे एक वजह होती है। इससे मुझे आभास हुआ, कि जब मैं हर बच्चे के प्रति सहानुभूति और सम्मान प्रदर्शित करता हूँ, तो मैं उनके साथ बेहतर संबंध बनाने की शुरुआत कर सकता हूँ। धीरे-धीरे, मुझे बच्चों के दृष्टिकोण में बदलाव नज़र आया।

एक बार, मैंने "माता-पिता के साथ पार्क जाना" और "स्कूल के लिए तैयार होना" जैसे विषयों के लिए नाटक में भूमिका निभाई। मैंने बच्चों की उनके माता-पिता के साथ की जाने वाली बातचीत और व्यवहार का एक अनुभव करने का सोचा। मैंने एक बच्चे की भूमिका निभाई और बच्चों ने माता-पिता की भूमिका निभाई। मैंने देखा की, वे बच्चे माता-पिता अपनी भूमिका को कितनी खूबसूरती से निभा रहे थे, और किस तरह से मुझे समझाने की कोशिश कर रहे थे! भूमिका निभाने के बाद हमारे पास एक चिंतन मनन के लिया एक मंच था, जहाँ हम गतिविधि से आधारित अपनी भावनाओं को व्यक्त करते | बच्चों को मिली महान सीखों को देखकर मैं हैरान था, और उन्होंने वादा किया कि वे अपने माता-पिता को परेशान नहीं करेंगे।

प्रशिक्षण के बाद बच्चों के प्रति मेरी धारणा में भारी बदलाव आया है। मुझे याद आया कि मैंने कक्षा दो के कुछ छात्रों के माता-पिता को बताया था, कि वे आलसी छात्र हैं। थोड़ा आत्मचिंतन के बाद, मुझे महसूस हुआ कि मैंने इन बच्चों को 'आलसी' करार दे दिया था। मैं ग्लानि महसूस करने लगा और इन बच्चों को कक्षा से बाहर ले जाकर और उनकी समस्याओं और उनकी भावनात्मक उथल-पुथल को समझने की कोशिश की। फिर उन्हें अभिप्रेरित करने के बाद, मैं उनके सीखने की क्षमता में सुधार देख पा रहा था।

सुरक्षित एवं सजग वातावरण बनाना, हर बच्चे को अवसर प्रदान करना

विज्ञान के शिक्षक जिन्हें 9 वर्षों का अनुभव है और कक्षा सातवीं को एक कम फीस वाले प्राइवेट स्कूल में पढ़ाते हैं।

मेरे द्वारा लिए गए अन्य प्रशिक्षणों की तुलना में ड्रीम अ ड्रीम द्वारा आयोजित कार्यशाला ने मुझे ज्यादा सशक्त बनाया। इस कार्यशाला में प्रत्येक प्रतिभागी का सम्मान किया गया। मैं उस माहौल को देखकर अभिभूत हो गया, जो प्रशिक्षकों ने बनाया था। उन्होंने सभी प्रतिभागियों के लिए सुरक्षित स्थान बनाया और उन्हें खुलकर और आराम से अपनी बात साझा करने के अवसर प्रदान किया। मैंने देखा कि प्रशिक्षकों ने प्रतिभागियों को स्वागत करते हुए और गैर आलोचनात्मक लहजे में आमंत्रित किया तथा हमें जवाब देने के लिए पर्याप्त समय भी दिया।

एक विज्ञान शिक्षक के तौर पर, मैंने बच्चों को निर्देश दिए कि उन्हें अगले दिन “इलेक्ट्रिक सर्किट” पर एक डेमो देने के लिए तैयार रहना है। अगले दिन, मैं हमेशा की तरह, एक मेधावी लड़के से अपने डेमो सत्र को पहले शुरू करने की उम्मीद कर रहा था। एक पल के लिए, मुझे प्रशिक्षकों का हर प्रतिभागी को अवसर देने वाला दृष्टिकोण याद आया। फिर अकस्मात ही, मैंने एक दूसरी छात्रा को बुलाया, जो एक औसत स्तर की छात्रा थी और मंच पर आने में संकोच कर रही थी। मैंने उसे प्रेरित किया और मंच पर आने के लिए पर्याप्त समय दिया। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि, वह आगे आई और एक शानदार डेमो दिया! मैं उसके प्रदर्शन से हैरान था। यह ऐसा दिन था, जब मुझे आभास हुआ कि मैं बच्चों के प्रति निर्णायक रवैया रखता था।

मेरी सबसे बड़ी सीख यह रही है कि एक शिक्षक के रूप में यह मेरी जिम्मेदारी है कि, मुझे कक्षा के सभी बच्चों को खुद को अभिव्यक्त करने के लिए स्थान, अवसर और समय प्रदान करना चाहिए।

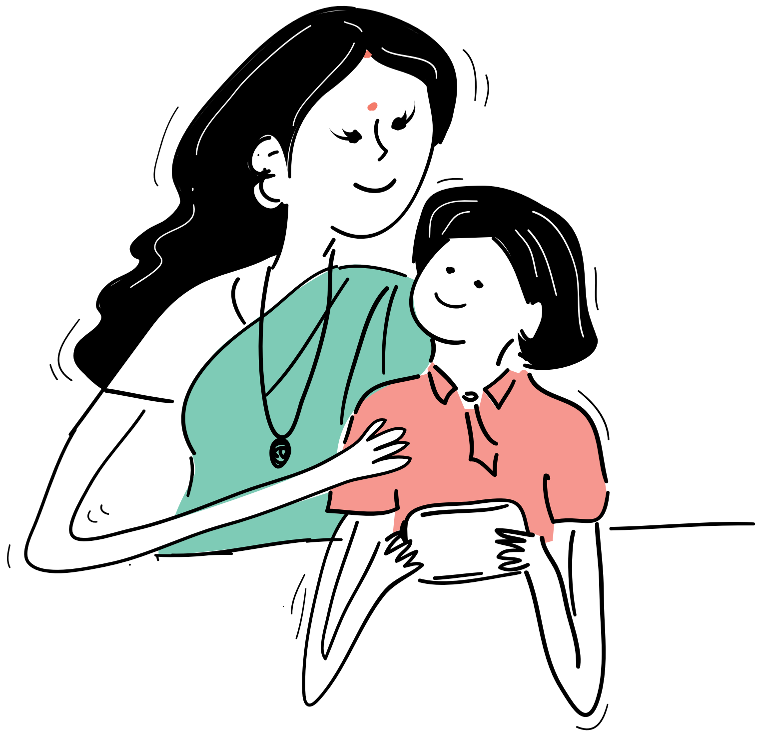

भाषा चुनौती होते हुए भी संवाद स्थापित कर बच्चों के साथ जुड़ना

अंग्रेजी के शिक्षक जिन्हें 3 वर्षों का अनुभव है और कक्षा दूसरी को एक कम फीस वाले प्राइवेट स्कूल में पढ़ाते हैं।

अरुणाचल प्रदेश, जो प्राकृतिक सौंदर्य की भूमि है, वही मेरा राज्य है। मैं अंग्रेजी और पर्यावरण विज्ञान पढ़ाने के लिए बैंगलोर आया था। क्योंकि मैं कन्नड़ नहीं जानता, इसलिए छात्रों के साथ जुड़ना और संवाद करना मेरे लिए एक चुनौती था । मेरी एक छात्रा शिवानी, लगभग एक घंटे तक रोने और चिल्लाने के बाद शांत होती है। कभी-कभी, वह अपने होंठों को इतनी कठोरता से काटती है, की उसमें से खून निकलने लगता है। शिवानी स्कूल में नहीं आना चाहती है। उसकी माँ और शिक्षक इस परेशानी के लिए बहुत असहाय महसूस किया करते हैं ।

ड्रीम अ ड्रीम द्वारा आयोजित कार्यशाला ने मुझे बच्चों की मानसिकता को समझने में मदद की और मुझे अपने भीतर की शक्ति के बारे में बताया। शिवानी के व्यवहार से मुझे यह पता चल रहा था कि हमने कभी यह जानने की कोशिश नहीं की है, कि वह स्कूल क्यों नहीं जाना चाहती। मैंने अपने सहयोगियों की मदद से उसके निकट जाने की कोशिश की, पर सब व्यर्थ रहा।

मैंने उससे उसकी जिंदगी के बारे में बात करने का फैसला किया और जाना की उसकी माँ का मोबाइल फोन उसका सबसे अच्छा दोस्त था। उसके दोस्त नहीं थे और वह अकेली थी। एक बार, मैंने शिवानी को अपने मोबाइल में एक गेम में, अगले स्तर तक पहुंचने में मेरी मदद करने को कहा। मैं उसकी आँखों में चमक देख पा रहा था और उसने कहा कि उसे 'कार गेम' खेलना पसंद है! वह फोन में खेले जाने वाले खेलों की आदी थी। मैंने शिवानी की माँ के साथ इस समस्या पर चर्चा की और उन्हें शिवानी के खेलने और पढ़ाई करने के समय को संतुलित करने हेतु कुछ सुझाव दिए। अब मैं बच्चों से जुड़ने और उनकी परेशानियों का मूल कारण जानने के लिए खुद को पूरी तरह से सशक्त अनुभव कर रहा हूँ।

ड्रीम स्कूल के लिए सामूहिक रूप से काम करना

अंग्रेजी के शिक्षक जिन्हें 6 वर्षों का अनुभव है और कक्षा नौंवीं व दसवीं को एक कम फीस वाले प्राइवेट स्कूल में पढ़ाते हैं।

ड्रीम अ ड्रीम द्वारा आयोजित कार्यशाला में, प्रशिक्षकों ने सभी प्रतिभागियों के लिए अपनी क्षमता का पता लगाने के लिए एक वातावरण बनाया। कार्यशालाओं ने हमें चार्ट का उपयोग करने की सुंदरता से अवगत कराया और हमनें स्वयं पर भी कार्य किया। मुझे याद है कि मैं अपनी बीएड कक्षाओं के दौरान चार्ट तैयार करने के लिए, पेशेवर लोगों को भुगतान किया करता था। मुझे कभी महसूस नहीं हुआ, कि मैं यह चार्ट अपने दम पर बनाने की क्षमता रखता हूँ! विज़ुअलाइज़ेशन गतिविधि ने मेरी सोच की प्रक्रिया को परिवर्तित कर दिया और मुझे आभास कराया कि, एक बच्चे को एक वयस्क से क्या चाहिए होता है - सहानुभूति, और एक ऐसा व्यक्ति जो उनके लिए पहले से राय नहीं बनाता, वे जो भी हैं, उसी रूप में उन्हें स्वीकार करता है। मैंने अपने सपनों के स्कूल की कल्पना की थी।

कार्यशाला के बाद, मैंने अपने छात्रों के साथ यही गतिविधि की। छात्रों ने अपनी ईमानदारी और साहस से मुझे आश्चर्यचकित कर दिया। उन्होंने स्कूल की हर मंजिल पर पीने का पानी, कक्षाओं के लिए उचित दरवाजे, ठीक प्रकार से चलने वाले छत के पंखे और हर कक्षा के लिए सीसीटीवी कैमरे लगवाने को कहा। मैंने उनकी सभी आवश्यकताओं को स्कूल प्रबंधन को बताया, जो उनकी जरुरतों से गहराई से प्रभावित हुए थे और इन मांगों की सराहना भी की। प्रबंधन ने स्कूल की हर मंजिल पर पीने के पानी और सीसीटीवी कैमरे लगवाने के लिए शीघ्रता से कदम उठाए।

इस छोटे से कार्य के द्वारा, मैंने देखा की छात्रों, शिक्षकों और स्कूल प्रबंधन ने एक-दूसरे को समझकर आपस में एक मजबूत बंधन विकसित किया है। मैं अपने छात्रों को पढ़ाने की अपनी क्षमताओं के बारे में ज्यादा आश्वस्त हो गया हूँ और उन बच्चों की जरूरत के अनुसार अपने जीवन में सहानुभूतिशील वयस्क बन गया हूँ।

OUR SUPPORTERS FOR THE PAST 3 YEARS

ड्रीम अ ड्रीम
No. 398/E, 17th क्रॉस, 9th मेन, 3rd ब्लॉक, जयनगर, बैंगलोर - 560011

+91.80.40951084 | info@dreamadream.org | www.dreamadream.org